शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

वर्ष-१

अंक-६

माह-मार्च २०१६

"नारी का सम्मान जहाँ है, संस्कृति का उत्थान वहाँ है।"

आओ हाथ से हाथ मिलाएं, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-१
अंक-६

माह-मार्च २०१६

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. सर्वेष्ट मिश्र

सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक

प्रांजल सक्सेना

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ० अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन एवं मुख्यपृष्ठ

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना संदेश

किसी भी समाज या राष्ट्र के निर्माण में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक समाज का दर्पण तथा समाज में उच्च आदर्श स्थापित करने वाला व्यक्तित्व है। गुरू अथवा शिक्षक का सरोकार विद्यार्थी को शिक्षा मात्र देने तक सीमित न हो अपितु वह अपने विद्यार्थी को प्रत्येक विपरीत परिस्थिति में पथ प्रदर्शित करने तथा उसके मन में उमड़ रही प्रत्येक जिज्ञासा को शान्त करने के लिए सदैव तत्पर रहे। शिक्षक विद्यार्थी को पुस्तकीय ज्ञान देने के अतिरिक्त उसमें जीवन कौशल का विकास भी करे।

'मिशन शिक्षण संवाद' ने प्रदेश में एक ऐसा मंच तैयार किया है जिसके माध्यम से शिक्षक एक–दूसरे के नवाचारी कार्यों को साझा करके 'प्राथमिक शिक्षा' को सकारात्मक परिवर्तन की नई दिशा एवं गति प्राप्त हो रही है। विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में अभूतपूर्व परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। 'मिशन शिक्षण संवाद' द्वारा प्रति माह प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका में नवाचार, शैक्षिक गतिविधि, सद्विचार, टी0एल0एम0 संसार, अनमोल बालरत्न एवं प्रेरक प्रसंग इत्यादि सम्मिलित किये जाते हैं जो शिक्षण स्तर में सुधार की स्थिति के महत्वपूर्ण घटक हैं।

मैं 'मिशन शिक्षण संवाद' की इस पहल की सराहना करता हूँ तथा मिशन द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं पत्रिका के आगामी अंक के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(अब्दुल मुबीन)
सहायक शिक्षा निदेशक
बेसिक शिक्षा निदेशालय, उ0प्र0,
निशातगंज, लखनऊ।

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

हमने अभी हाल ही में महिला दिवस मनाया है और अब होली मनाने जा रहे हैं। जीवन के अनेक रंग होते हैं कभी खुशी, कभी गम, कभी संघर्ष तो कभी भ्रम। इन रंगों को जानने, पहचानने और अनुकूल प्रतिक्रिया देने की समझ शिक्षा ही देती है। एक ही परिस्थिति पर एक अशिक्षित, अल्पशिक्षित, शिक्षित और उच्च शिक्षित की प्रतिक्रियाएँ भिन्न होती हैं। यहाँ शिक्षा से अभिप्राय ऊँची डिग्रियों से बिल्कुल भी नहीं है। शिक्षा वही सार्थक होती है जिसमें प्राकृतिक और मानवीय समझ तथा संस्कारों का समावेश हो। विगत वर्षों में विज्ञान, गणित को इतनी तवज्जो मिलने लगी कि नैतिक शिक्षा पीछे छूटने लगी। इसलिए तमाम संकल्पों और कार्यों के बीच मिशन शिक्षण संवाद के सहयोगियों ने ये बीड़ा उठाया कि विद्यार्थियों के नैतिक विकास के लिए प्रतिदिन एक नैतिक शिक्षा की कहानी बच्चों को पढ़ायी जाए। आज कुछ सहयोगियों की सहायता से मिशन शिक्षण संवाद प्रति शैक्षणिक दिवस में नैतिक प्रभात की कहानियाँ भेज रहा है।

समाज में बेसिक शिक्षकों के प्रति जो नकारात्मक छवि बनी हुई थी। वह धीरे–धीरे टूट रही है। हमारी शिक्षिका बहनें दुर्गम से दुर्गम क्षेत्र में भी अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करके अपनी कर्मठता का प्रमाण दे रही हैं। इसी कर्मठता को नमन करते हुए इस बार के अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस से प्रतिदिन एक शिक्षिका बहन की कर्मठता और उपलब्धियों की कहानी को डिजिटल पटल पर सामने लाया जा रहा है।

रंगों से सराबोर इस माह में मिशन शिक्षण संवाद मासिक पत्रिका का नौवाँ अंक लेकर सामने आया है। इसमें टी०एल०एम० के गुलाल से लेकर, प्रेरक प्रसंग का अबीर है, विचारशक्ति की पिचकारी से लेकर अनमोल रत्नों के गुब्बारे हैं। आशा है कि सत्रांत का ये अंक भी आपको पसंद आएगा और इसे पढ़कर नवीन सत्र में पुनः नये जोश और जुनून के साथ बच्चों का भविष्य सँवारने में जुट जाएँगे।

आपका

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
पाठकों के पत्र	7
विचारशक्ति	8–10
मिशन गीत	11
प्रतिभा का लोहा मनवाते शिक्षक	12
अनमोल रत्न	13–14
निन्दक नियरे राखिए	15–17
टी.एल.एम.संसार	18–19
गतिविधि	20
इंग्लिश मीडियम डायरी	21–22
प्रेरक–प्रसंग	23
सद्विचार	24
बाल साहित्य	25
बच्चों का कोना	26–27
शीर्षासन	28–29
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	30
माह का मिशन	31
महिला अध्यापकों की चुनौतियां	32
कस्तूरबा विशेष	33
मील का पत्थर बनता श्यामपट्ट कार्य	34
योग विशेष	35–36
खेल विशेष	37–38
मिशन उपस्थिति	39
मिशन हलचल	40–41

पाठकों के पत्र

मिशन शिक्षण संवाद की पत्रिका में प्रकाशित उक्त बेहद प्रभावी लेख के लिए मनोज जी को साधुवाद

वास्तव में नीति–नियंताओं, अभिभावकों और सम्पूर्ण समाज को समझना चाहिए कि छोटे बच्चे को अंग्रेजी भले ही पढ़ायें लेकिन सम्पूर्ण ज्ञान का माध्यम अंग्रेजी को बनाकर उसके नाजुक कंधों का बोझ न बढ़ायें।

उसकी मौलिक अभिव्यक्ति का गला न दबायें।

उसका आत्मविश्वास न डगमगायें।

उसे खुले आकाश में उड़ने दें, पैरों में बेड़ियाँ न पहनायें

(प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

विचारशक्ति–1

भाषा–विचार प्रेषण का साधन

–आकिब जावेद,
शिक्षण संवाद

बच्चा जब किसी परिवेश में जन्म लेता है तब वह अपने धर्म, जाति एवं देश–देशांतर की प्रमुख भाषा को ही सबसे पहले सीखता है। वह भाषा को बिना किसी गुरु या विद्यालय में अध्ययन किये बगैर ही सीख लेता है। परंतु प्रश्न आता है कि भाषा क्या है?

तो भाषा विचारों को व्यक्त करने का एक प्रमुख साधन है। जो मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है, जिनके द्वारा मन की बात बताई जाती है। भाषा की सहायता से ही किसी समाज विशेष या देश के लोग अपने मनोगत भाव अथवा विचार एक–दूसरे पर प्रकट करते हैं। मौखिक भाषा तक पहुँचने की प्रक्रिया अत्यंत लंबी रही है। भाषा के द्वारा ही हम किसी दूसरे व्यक्ति के भावों, विचारों के साथ–साथ उसके व्यक्तित्व पारिवारिक–पृष्ठभूमि का परिचय प्राप्त करते हैं। भाषा के महत्त्व को मनुष्य ने लाखों वर्ष पूर्व पहचान कर उसका निरंतर विकास किया है। जब व्यक्ति कोई बात मुँह से उच्चरित करता है या उसे लिखकर अभिव्यक्त करता है तो उसकी भाषा में उसके अंतरंग भावों के साथ–साथ उसका राज्य, वर्ग, जातीयता और प्रांतीयता भी सामने निकलकर आ जाती है। इसका संबंध व्यक्ति की मानवीय संवेदना और मानसिकता से भी है। जिस व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य और मानसिकता कमतर स्तर की होगी, उसकी भाषा के शब्द और उनके मुख्यार्थ, व्यंग्यार्थ भी क्षुद्र स्तर के होंगे, जबकि उन्नत मानसिक संवेदना वाले व्यक्ति की भाषा भी स्वस्थ और संस्कारी होगी।

दुनिया में हजारों प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं। हर व्यक्ति बचपन से ही अपनी मातृभाषा या देश की भाषा से तो परिचित होता है लेकिन दूसरे देश या समाज की भाषा से नहीं जुड़ पाता। सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान–प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है।

यही नहीं, यह हमारे समाज के निर्माण, विकास, अस्मिता, सामाजिक व सांस्कृतिक पहचान का भी महत्वपूर्ण साधन होती है। भाषा के बिना मनुष्य अपूर्ण है और अपने इतिहास व परंपरा से विछिन्न होता है।

भाषा के महत्व को मनुष्य ने लाखों साल पहले पहचानकर उसका निरंतर विकास किया है। भाषा में ही हमारे भाव, राज्य, वर्ग, जातीयता और प्रांतीयता आदि भी झलकती है। हमारा देश विभिन्न धर्म सांस्कृतिक मूल्यों में विभाजित हैं तो सामान्य रूप से जो जिस प्रदेश एवं धर्म, जाति से सम्बन्ध रखता होगा उसकी वो भाषा उसके चरित्र में बस चुकी

होगी। तब उसे शिक्षा के माध्यम से अन्य भाषा के बारे में जानकारी प्रदान की जा सकती है। जिससे वह अपने देश में कहीं भी जाए उसे भाषा का ज्ञान हो। वह बालक जब बड़ा होगा तब व्यावसायिक रूप से एवं जीवन के अन्य महत्वपूर्ण चीजों में भाषा का उपयोग कर सकता है।

मनुष्य को सभ्य और पूर्ण बनाने के लिए शिक्षा जरूरी है और सभी प्रकार की शिक्षा का माध्यम भाषा ही है। साहित्य, विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि सभी क्षेत्रों में प्रारंभिक से लेकर उच्चतर शिक्षा तक हर स्तर पर भाषा का महत्व स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। जीवन के सभी क्षेत्रों में किताबी शिक्षा हो या व्यवहारिक शिक्षा, यह भाषा के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। विश्व में विज्ञान से लेकर भाषा विज्ञान तक सभी क्षेत्रों में नए–नए शोध होते रहते हैं। इनमें अध्ययन व शोध लेखन के लिए नए–नए शब्द रचे जाते हैं। इन शब्दों से संचय भाषा के द्वारा सामाजिक–वैज्ञानिक विकास की अभिव्यक्ति होती है।

भाषा के बिना लिखित साहित्य का अस्तित्व ही संभव नही होता। भाषा के माध्यम से साहित्य को लिपिबद्ध किया जा सका हैं। वेद, पुराण, उपनिषद् से लेकर तुलसीदास आदि का साहित्य भाषा के कारण इतने सालों तक सुरक्षित रहकर आज तक भी हमें अध्ययन के लिए प्रेरित करता है। शिक्षा में भाषा को इसीलिए पढ़ाया जाता है जिससे बालक बड़ा होकर किसी भी भाषा को पढ़ सके या अपना योगदान कर सके। साहित्यकार भी ऐसी भाषा को आधार बनाते हैं, जो उनके पाठकों व श्रोताओं की संवेदनाओं के साथ एकाकार करने में समर्थ हों।

हमें भी विद्यालयों में अपने बच्चों को अपनी मातृभाषा के महत्व को समझाना होगा एवं हमें अपनी परंपरा का वास्तविक चित्र उन्हें दिखाना होगा। माता के अलावा संस्कार का तीसरा स्त्रोत बच्चे का वह प्राकृतिक व सामाजिक परिवेश होता है जिसमें वह जन्म लेता है और पलता–बढ़ता है। यह परिवेश उसके आहार–व्यवहार, शरीर के रंग–रूप के साथ ही आदतें भी बनाता है। सामाजिक परिवेश के अंतर्गत परिवार, मोहल्ला, गाँव और विद्यालय के साथी, सहपाठी, मित्र, पड़ोसी व शिक्षक आते हैं।

हमारे विद्यालय बच्चों के भाषा विकास में महत्वपूर्ण कदम उठा रहे है। बच्चों को उनकी भाषा त्रुटियों को दूर करने का निरंतर प्रयास किया जा रहा हैं। भाषा का महत्व शिक्षा में निरन्तर रहा है, बालक के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षक को बालक के भाषा पर विशेष जोर देने की आवश्यकता है जिससे उसका सर्वांगीण विकास हो सके।

आकिब जावेद,
सहायक अध्यापक,
अंग्रेजी माध्यम प्राइमरी स्कूल उमरेहण्डा,
विकास खण्ड–बिसंडा,
जिला–बाँदा,उत्तर प्रदेश।

विचारशक्ति–2

मजदूरी की मजबूरी

विभव प्रताप
इंचार्ज प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय भडाही
ब्लॉक चोपन जिला सोनभद्र

भूख बहुत सशक्त होती है इसके आगे दुनिया का हर जीव घुटने टेक देता है। कक्षा 12 से ही घर से बाहर रहकर पढ़ने लगा। कभी होटल तो कभी अपने से खाना बनाकर खाता। कभी–कभी भूखे सो जाता। आज भी यही स्थिति है खाने के मामले में बेहद लापरवाह हूँ इसीलिए भूख की शक्ल बहुत अच्छे से पहचानता हूँ।

बेसिक के बच्चे भूख के आगे शिक्षा को दाँव पर लगा देते हैं और लगायें भी क्यों न? शिक्षा तो दीर्घकाल में सशक्त होती है भूख को खत्म करने के लिए। मध्यान्ह भोजन इसीलिए बेसिक में बहुत जरूरी है खैर इसके कई साइड इफेक्ट भी हैं। जनजाति क्षेत्रों के विद्यालय में यह योजना रामबाण है उपस्थिति बेहतर करने के लिए, लेकिन इसका कतई मतलब नहीं कि इन क्षेत्रों में बच्चे केवल खाने ही आते हैं।

मजदूरी सदाबहारी काम है। कोई भी कभी भी कहीं भी कर सकता है। दिन के 300 तो फिक्स हैं ही। कभी–कभी इसके शिकार बच्चे होते हैं। ये बच्चे मजदूरी शौक से नहीं वरन मजबूरी में करते हैं। माता–पिता बाहर कमाने चले गए होते हैं या होते ही नहीं। दोपहर भोजन की व्यवस्था सरकार तो कर देती है लेकिन सुबह–शाम के भोजन की व्यवस्था इसी मजदूरी से होती है।

बहुत सी गैर सरकारी संस्थाएँ बच्चों को मजदूरी करने से रोकती हैं लेकिन उससे पहले उन्हें इन बच्चों या ऐसे बच्चों के परिवार के लिए कोई आय का स्रोत मुहैया करा देना चाहिए या कोई ऐसा जुगाड़ करना चाहिए कि इन्हें भूख ही न लगे। बेसिक के अध्यापक को रोज एक घण्टे ऐसे ही बच्चों को बुलाने में लगाना पड़ता है। समझाते भी हैं लेकिन अंततः खुद को समझा लेते हैं कि मजदूरी नहीं करेंगे तो रात में खाएँगे क्या?

मजदूरी ही केवल और केवल एक चारा है भूख को मारने के लिए। चोरी कर नहीं सकते क्योंकि क्षेत्र में कोई इतना अमीर नहीं। लकड़ियाँ भी ज्यादा काट नहीं सकते क्योंकि पकड़े जाने का डर होता है। कोई कम्पनी भी नहीं है इर्द–गिर्द कि पार्ट टाइम काम कर लें

अतः मजदूरी विथ मजबूरी ही सही है।

इस तस्वीर को खींचने की साहस नहीं हो रही थी फिर भी खींची ताकि दिखा सकूँ कि जिस भारत में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का नारा बुलंद है और अभियान जोर पकड़ रहा है उस भारत की कुछ बेटियों का ये भी हाल है। यदि हम 5 सितारे होटल में खाने के शौकीन हैं तो इनका भी हक बनता है कि ये अपने भूख का सामना बखूबी करें ताकि हम कह सकें बेटियाँ बची हैं....

हम बेसिक के अध्यापक इन बच्चों के लिए अदम गोंडवी जी का एक शेर हमेशा पढ़ते हैं कि

जी में आता है कि आईने को जला डालूँ
भूख से जब मेरी बच्ची उदास होती है।
आप आयें तो कभी गाँव के चौपालों में
मैं रहूँ या न रहूँ ये भूख मेजबां होगी।।

मिशन गीत

मिशन शिक्षण संवाद
जैसे मन का मन से संवाद
शिक्षक का स्वयं से वाद–प्रतिवाद।

मिशन शिक्षण संवाद
जैसे शैक्षिक उन्नयन का शंखनाद
निरन्तर शैक्षिक स्तर को कर रहा आबाद।

मिशन शिक्षण संवाद
गीत, कविता, कहानी से बच्चों संग संवाद
थकन मिटाकर, मन का हर लेता अवसाद।

मिशन शिक्षण संवाद
जैसे पंछी इक आजाद
अंबर जैसा विस्तृत मन, मिटाता हर विवाद।

मिशन शिक्षण संवाद
घोर तिमिर में रोशनी सा साधुवाद
देकर सुन्दर सीख स्थापित करता संवाद।

मिशन शिक्षण संवाद
बंजर भूमि के लिए पोषक खाद
कितने व्यथित मनों को करता नित आबाद।

रचयिता
डॉ0 रंजना वर्मा,
प्राथमिक विद्यालय बूढ़ाडीह–1,
विकास खण्ड–भटहट,
जनपद–गोरखपुर।

प्रतिभा का लोहा मनवाते शिक्षक

राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में मिशन परिवार का जलवा

– आये दिन बेसिक शिक्षा परिषद व एससीईआरटी सहित जनपद व राज्य स्तरीय विभागीय प्रतियोगिताओं व कार्यक्रमों में मिशन के साथी दिखा रहे अपना हुनर।

जी हाँ। मिशन शिक्षण संवाद अब एक ऐसा नाम बन चुका है जिसकी पहचान न केवल शिक्षकों के बीच शैक्षिक गुणवत्ता उन्नयन के लिए काफी अच्छी बन चुकी है बल्कि अब इस अभियान से जुड़े शिक्षक राज्य स्तरीय प्रतियोगियों में अपना परचम लहरा रहे हैं।

यह बात सभी को पता है कि मिशन शिक्षण संवाद प्रदेश के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत स्वतःस्फूर्त शिक्षकों का एक ऐसा मंच है जहाँ इस शिक्षकों ने अपने व्यक्तिगत प्रयास से अपने कार्यरत स्कूलों को बेहतरीन बनाकर प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था में सकारात्मकता की जान फूँकने का काम किया है। मिशन द्वारा घोषित अनमोल रत्नों ने न केवल अपने व्यक्तिगत धन व संसाधनों का प्रयोग कर स्कूलों के भौतिक परिवेश को सुधारा है बल्कि पठन–पाठन के क्षेत्र में अपने नवाचारों के माध्यम से शैक्षिक गुणवत्ता में अनवरत उत्तरोत्तर वृद्धि कर रहे हैं।

इस समय इसका जीता जागता प्रमाण इन शिक्षकों के राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने और उनके द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन करने से भी साफ देखा जा सकता है। गत वर्ष व इस वर्ष एससीईआरटी द्वारा आयोजित आईसीटी, योगा, पपेट, कहानी सुनाने जैसी प्रतियोगिताओं में इन शिक्षकों ने अपना दमखम दिखाया और कई पुरस्कार हासिल किए। इतना ही नही गत वर्ष प्रदान किए गए उत्तर प्रदेश से एक मात्र राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार और अधिकांश राज्य शिक्षक पुरस्कार मिशन से जुड़े शिक्षकों को प्रदान किए गए। हाल ही में बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा राज्य स्तर पर प्रदान किए गए राज्य स्तरीय आईसीटी पुरस्कारों में भी मिशन के शिक्षकों का बोलबाला रहा।

इस प्रकार यह साफ दिख रहा है कि मिशन के प्लेटफॉर्म का उपयोग न केवल शिक्षक सीखने सिखाने के लिए कर रहे हैं बल्कि शिक्षा विभाग के अधिकारियों और जिम्मेदारों की नजर भी इन शिक्षकों की तारीफ और प्रोत्साहित कर रही है। स्थिति यह है कि प्रदेश के विभिन जनपदों में आयोजित होने वाली शिक्षा विभाग की प्रदर्शनी, सेमिनार और मेलों का आयोजन तो जैसे मिशन के साथियों के नाम ही लिखा जा चुका है।

मिशन से जुड़े शिक्षकों का हौसला बढ़ाने में शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने जो योगदान दिया है उसकी चर्चा भी इस बात को और पुष्ट करती है कि शिक्षा विभाग की सकारात्मक तस्वीर बनाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। प्रदेश के बेसिक शिक्षा निदेशक डॉ0 सर्वेंद्र विक्रम बहादुर सिंह, अपर निदेशक सुश्री ललिता प्रदीप, सचिव श्रीमती रूबी सिंह, सहायक निदेशक मो0 मुबीन जी जैसे विभिन्न गणमान्य अधिकारी समय–समय पर मिशन का हौसला बढ़ाते रहते हैं। वर्तमान में तो स्थिति यह है कि मिशन के कार्यों से प्रभावित होकर प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में कई और शिक्षक संगठन सरकारी स्कूलों की बेहतरी के लिए कार्य करने को उत्सुक हुए और कार्य भी शुरू किया है। उम्मीद ही नहीं विश्वास है कि हम बहुत जल्द ही ऐसे कर्तव्यनिष्ठ शिक्षकों के सहारे बेसिक शिक्षा को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाने में सफल होंगे।

डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र

(लेखक डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र सन 2016 में बस्ती मण्डल की पहली स्मार्ट क्लास शुरू करने वाले आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट, बस्ती के राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त शिक्षक हैं।)

अनमोल रत्न

1

नीतू सिंह (प्र०अ०)
प्रा०वि० शाहपुर तिगरी
नगर क्षेत्र मुरादाबाद

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/01/blog-post_96.html

2

शिव कुमार शर्मा (प्रभारी अध्यापक)
पूर्व माध्यमिक विद्यालय रूपपुर
ब्लॉक– मिलक, जिला–रामपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/01/blog-post_57.html

3

रूपाली श्रीवास्तव (प्र०अ०)
प्रा० वि० फरीदपुर सलेम,
चायल, कौशाम्बी

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/02/blog-post_65.html

4

संजय कुमार यादव
इं०मी०प्रा०स्कूल लालई
ब्लॉक–खैरगढ़ जिला–फिरोजाबाद

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/02/blog-post_7.html

5

सबीना साहनी (सहायक अध्यापिका)
प्राथमिक विद्यालय घुराट (अंग्रेजी माध्यम)
ब्लॉक–बंगरा, जनपद–झाँसी (उ. प्र.)

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/02/blog-post_36.html

निन्दक नियरे राखिए

शिक्षा बाध्यकारी क्यों

—अवनीन्द्र सिंह जादौन

शिक्षण संवाद

क्या किसी को शिक्षा के लिए बाध्य किया जा सकता है? क्या यह उस बालक का उत्पीड़न नहीं होगा जिसको किताबी शिक्षा ग्रहण करने में कोई रूचि नहीं है? जहाँ तक व्यवहारिकता की बात है तो किसी भी 5–6 वर्ष के छात्र के लिए अपने माता पिता से अलग किसी कक्षा में 6 घंटे बिताना किसी कारागार की सजा के समान हो सकता है। वास्तव में वर्तमान शिक्षा प्रणाली एक निर्धारित पाठ्यक्रम को बच्चे के दिमाग में इस प्रकार फिट करने की प्रक्रिया भर है जिससे वह परीक्षा लेने वाले को संतुष्ट कर निर्धारित अंक हासिल कर पाए। शिक्षा विभाग प्रारंभिक और उच्च कक्षाओं तथा सरकारी और निजी विद्यालयों के लिए एक ही प्रकार की शिक्षा पद्धति की व्यवस्था करता है जबकि बच्चों के शैक्षिक और मानसिक स्थिति के अनुरूप प्रत्येक कक्षा और प्रत्येक छात्र के लिए अलग प्रकार के कौशल का इस्तेमाल कर उसको निर्धारित अधिगम स्तर तक पहुँचाना अध्यापक के लिए चैलेंज होता है।

सरकार यह समझती है कि सभी छात्र शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रूप से इतने परफेक्ट होते हैं कि उनके द्वारा किसी कालांश के लिए निर्धारित विषय के उस भाग को एक साथ एक ही बार में सीख पाने में सक्षम होते हैं और कालांश खत्म होने पर सभी छात्र उस पाठ के सभी प्रश्नों के उत्तर भी बिना अटके देने में सक्षम होते है। जबकि व्यवहारिक रूप में कक्षा कक्ष के केवल 10 प्रतिशत छात्र ही प्रथम बार में पढ़ाये गए पाठ का 60–70 प्रतिशत भाग समझ पाते हैं शेष छात्रों को कई बार में यह विषय वस्तु समझ आती है। विभाग द्वारा शेष बच्चों को उस पाठ को कई बार पढ़ाने के लिए कोई कालावधि, उसके निर्धारित मासिक और साप्ताहिक पाठ्यक्रम में नहीं होती। सरकार किसी भी कक्षा के पाठ्यक्रम और विषयों को बच्चों की विविधिता के अनुरूप निर्धारित नहीं करती जबकि बच्चों के सामाजिक मानसिक और आर्थिक स्तर का स्पष्ट प्रभाव उनके अधिगम पर स्पष्ट दिखाई देता है इसीलिए निजी विद्यालय बच्चों के प्रवेश के समय उनके अभिभावकों का परीक्षण कर अपने विद्यालय के शैक्षिक स्तर के अनुरूप छात्रों का चयन प्रथम कक्षा में कर लेते हैं। इसके बावजूद भी कक्षा 10 तक आते–आते सभी छात्रों के अधिगम और सम्प्राप्ति के स्तर में बहुत अंतर आ जाता है जो छात्रों की अधिगम विविधिता का स्पष्ट प्रमाण है।

सभी छात्रों में उनके विशिष्ट शारीरिक क्षमता के कारण किसी भी विषय को ग्रहण करने की अलग–अलग क्षमता होती है हमारा शैक्षिक तंत्र इस तथ्य को सिरे से नकार देता है उसके अनुसार प्रत्येक वर्ष सभी छात्रों को निर्धारित पाठ्यक्रम का न्यूनतम अधिगम स्तर आसानी से प्राप्त कराया जा सकता है। यह कुछ इस प्रकार की कल्पना है कि हर व्यक्ति तबला बजाना सीख सकता है। हर व्यक्ति तैरना सीख सकता है हर व्यक्ति गायन सीख सकता है पर व्यवहारिक रूप में कोई व्यक्ति वह विधा ही सीख सकता है जिसके लिए वह

शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार हो। जब एक अध्यापक ग्रेजुएट होने के बाद भी केवल एक ही विषय को कुशलता से पढ़ाने में सक्षम होता है तो आप यह कल्पना कैसे कर लेते हैं कि कोई छात्र एक दिन में सभी विषय कुशलता से सीख सकता है। यहाँ शिक्षक योग्य अनुभवी और शैक्षिक रूप से संपूर्ण होने के बाद भी सभी विषयों पर पूरी पकड़ नहीं रखते हैं तो फिर अध्ययनरत छात्र से यह अपेक्षा कैसे कर सकते हैं कि वह सभी विषयों में पूर्ण दक्षता से अधिगम कर पाएगा।

सरकार अभी तक यह समझने में असफल रही है कि शिक्षक किसी छात्र के सुगमकर्ता मात्र हैं वह छात्र को उसके प्रश्नों और कौतूहल को शैक्षिक तरीके से उत्तरित करने का माध्यम मात्र हैं। वहीं स्कूल छात्र को अनुशासन और सामुदायिक सहभागिता सिखाने का स्थान है। कोई भी शिक्षक किसी छात्र के मन में उसके अरुचि के विषय को जबरदस्ती प्रवेशित नहीं करा सकता है, हाँ डंडे और भय की दम पर उस विषय वस्तु को रटकर लिख भर देने की क्षमता जरूर पैदा कर सकता है पर ऐसे छात्रों के मन में न तो उस विषय के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है और न ही पाठ के प्रति कौतूहल और नए प्रश्न। प्रत्येक छात्र अपने मनचाहे विषय में ही सर्वाधिक समय व्यतीत करना चाहता है। उसी विषय के तथ्यों के लेकर उसके मन में प्रश्न उपजते हैं और वह इन्हीं विषयों के प्रश्नों के उत्तर को खोजने के लिए प्रयासरत रहता है। हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली प्रारंभिक स्तर पर छात्र को मनचाहे विषय के साथ स्कूल में जीने की आजादी प्रदान नहीं करता है। हम अक्सर देखते हैं कि खेल खिलाने के नाम पर कुछ बच्चे खुशी से उछल पड़ते हैं जबकि कुछ खेल के कालांश में भी कक्षा में ही बैठे रहते हैं क्योंकि उन्हें खेलना पसंद नहीं है। इसी तरह की प्रतिक्रिया अलग–अलग छात्र अलग अलग विषयों के अध्यापन को समय भी देते हैं। कला, क्राफ्ट खेलकूद, पी टी या रचनात्मक कार्य बच्चों के पसंदीदा विषय हैं जबकि गणित, अंग्रेजी आदि उनके लिए बोझिल विषय हैं।

वास्तव में हमारी शिक्षा प्रणाली हमारे छात्रों के नैतिक मूल्यों और नैसर्गिक प्रतिभाओं के सम्पूर्ण विकास का पर्याप्त अवसर नहीं देती है उसे अपने मनचाहे विषय को पढ़ने को भी एक कालांश मिलता है और अरुचि वाले विषय को भी पढ़ने के लिए एक कालांश मिलता है। जबकि होना यह चाहिए कि हम कक्षा 3 तक बच्चे को भाषा और सामाजिक परिवेश के ज्ञान के साथ उसकी नैसर्गिक प्रतिभा को जानने के लिए उसको पर्याप्त अवसर दें और आगामी कक्षा में उसको उन्हीं विषयों को अधिकाधिक पढ़ने के अवसर प्रदान करना शुरू करें जिसमें उसे अधिक रुचि हो ताकि वह अपनी विशिष्ट नैसर्गिक प्रतिभा के साथ अपनी पूर्ण क्षमताओं का उपयोग करते हुए अपने रूचि के क्षेत्र में सम्पूर्ण दक्षता प्राप्त कर सके। हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली ऐसा करने का अवसर नहीं देती है क्योंकि इस प्रणाली को लागू करने के लिए प्रत्येक विधा के लिए एक प्रशिक्षित अध्यापक की आवश्यकता होगी जो पूरे विद्यालय से उस विधा में चयनित सम्पूर्ण छात्रों को सम्पूर्ण कालांश में प्रशिक्षण दे सके। वर्ष के अंत में इन छात्रों के मूल्याङ्कन और अंकपत्र के निर्माण की दिक्कत के चलते सभी विषयों को छात्रों पर थोपकर उन्हें सभी में पास होने की अनिर्वायता थोप दी जाती है जो सभी छात्रों को अधकचरा ज्ञान देकर उसके नैसर्गिक क्षमता को खत्म कर देती है।

हमारी शिक्षा प्रणाली अध्यापकों और छात्रों को स्वायत्ता नहीं देती है। अध्यापक

छात्रों को दिन भर कहानी नहीं सुना सकता है वह दिन भर खेल नहीं खिला सकता है क्योंकि ऐसा करने पर उस दिन के लिए अन्य विषयों का निर्धारित पाठ्यक्रम पूरा नहीं हो पाता है जिसे निर्धारित सप्ताह और निर्धारित महीने में पूरा करके परीक्षा लेना अनिवार्य है। अध्यापकों को अपने छात्रों के न्यूनतम शैक्षिक स्तर के प्रश्नपत्र या मौखिक मूल्याङ्कन के आधार पर भी छात्रों को अगली कक्षा में ले जाने का अधिकार नहीं है। अध्यापकों को छात्रों के अनुरोध पर दिन भर रचनात्मक गतिविधि कराने की स्वायत्ता नहीं है। क्योंकि ऐसा करते पाये जाने में निरीक्षणकर्ता द्वारा कठोर कार्यवाही के प्रावधान हैं। यहाँ तो शासन स्तर पर तय व्यवस्था के अनुरूप ही शिक्षण करने की बाध्यता है और उसके निरीक्षण के लिए कई स्तरों पर जाँच अधिकारी भी नियुक्त हैं जो केवल यह पता लगाते हैं कि अध्यापक शासन के निर्देशों के अनुक्रम में शिक्षण कर रहा है या नहीं। अगर अध्यापक ऐसा करता नहीं पाया जाता है तो उसे दंड प्रक्रिया के तहत ऐसा करने को बाध्य कर दिया जाता है। अगर किसी छात्र समूह को किसी विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए तैयार करना होता है तो ऐसे में उन्हें कई दिनों तक लगातार तैयारी करवानी होती है ऐसे में उतने दिन उन कालांश के विषय का अध्ययन उन्हें छोड़ना होता है तो स्वाभाविक रूप से आगामी परीक्षा में उन छोड़े गए कालांश से सम्बंधित प्रश्नों के उत्तर वह नहीं दे सकेगा। दूसरा उपाय यह है कि अध्यापक विद्यालय समय के उपरांत यह कार्य करे। पर इसके लिए न तो अभिभावक अनुमति देते हैं और न अध्यापक समय देने को राजी होते हैं। तब नियमित शिक्षण के दौरान रचनात्मक क्षमता छात्रों में कैसे विकसित की जाए जिससे उनके हुनर को समाज के सामने आने का अवसर मिले।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के कारण ही छात्रों को अपने रूचि के विषय में कार्य करने का पर्याप्त समय अवसर और सुविधाएं उपलब्ध नहीं हो पाती जिसके कारण नए अनुसन्धान और अविष्कार सामने नहीं आ पा रहे हैं स्कूल में सभी निर्धारित कालांश में उपस्थित रहने, सभी का दिया कार्य पूरा करने, सभी में दक्षता और निपुणता हासिल करने की बाध्यता के चलते छात्रों को मौलिक चिंतन और हॉबी को पूरा करने का समय नहीं मिलता है। कक्षा में फेल करने की प्रणाली दुबारा लागू होने के बाद तो ग्रामीण क्षेत्र के गरीब मजदूर और वंचित वर्ग के छात्रों के कक्षा 5 की बाद की शिक्षा को ग्रहण लगना तय है। क्योंकि सरकार छात्रों की शिक्षा उन्हें अच्छा नागरिक बनाने के लिए नहीं बल्कि कुशल कामगार बनाने के लिए देती है।

अवनीन्द्र सिंह जादौन

परिचय
टीचर्स क्लब उत्तर प्रदेश के महामंत्री एवं मिशन शिक्षण संवाद के कोऑर्डिनेटर के बतौर 5 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में सामुदायिक सहभगिता के कार्यक्रमों में सक्रिय।
शैक्षिक आलेख लेखन में रुचि। कुछ आलेख पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए हैं।

पर्यायवाची तितली

कक्षा– 6, 7, 8 विषय– हिन्दी

आवश्यक सामग्री :– चार्ट, वाटर कलर' आइसक्रीम–स्टिक, फेविकॉल,कलर टेप, कलर स्कैच पैन, आदि।

बनाने की विधि– मोटा चार्ट पेपर लेकर उस पर 63•48 सेमी के आकार में तितली का चित्र बनाकर काट लिया। इसके बाद मध्य में 9•11 सेमी की खिड़की तैयार की। इसमें पीछे की तरफ आइसक्रीम स्टिक चिपका कर झिर्री तैयार की। 41•8 सेमी की दो पट्टी तैयार की। पर्यायवाची शब्द व चित्र के लिए (शब्दों के अनुसार)

कार्य विधि :– पहली पट्टी को धीरे–2 सरकाने से चित्र व दूसरी पट्टी को सरकाने से पर्यायवाची शब्द एक सीध में आ जायेगें । इसी प्रकार दोनों पट्टीयों को धीरे– धीरे सरकाने से प्रत्येक शब्द के पर्यायवाची शब्द व चित्र छात्रों के सामने होगें। इस प्रकार छात्र आसानी से पर्यायवाची शब्द याद करने का प्रयास करेंगे।

रविन्द्र कुमार गोयल
माडल कन्या उच्च प्रा. वि .
जैनपुर (नकुड़)
सहारनपुर

हमारा सौर मंडल

प्रकरण :– हमारा सौर मंडल
कक्षा – 3 व 4
विषय – विज्ञान
उद्देश्य – यह विज्ञान शिक्षण सहायक सामग्री छात्रों को हमारे सौरमंडल की अवधारणा की स्पष्ट रुप से समझाने में मददगार है।
इस सहायक सामग्री की सहायता से हम छात्रों को सूर्य , उपग्रह हमारी पृथ्वी,ग्रहों की सूर्य के चारों तरफ अपनी अपनी कक्षा में घूर्णन गति आदि के विषय में समझा सकते हैं।छात्र स्वंय भी करके सीखेंगे।
आवश्यक सामग्री : कार्डबोर्ड का चौकोर टुकड़ा (40X40 सेमी), काला व हरा चार्ट शीट, सेलोटेप, ग्लू, लोहे का स्टैंड, बैटरी मोटर, तार, रंगीला वाटर कलर, ब्रश, स्केच पेन्स और 9 गेंद (विभिन्न आकार की ग्रहों के अनुसार)
निर्माण विधि– कार्ड बोर्ड के टुकड़े को काले चार्ट पेपर से कवर कर देंगे।ग्लू व सेलोटेप से चार्ट को अच्छे से चिपका देंगे। अब सबसे बड़ी गेंद लेकर उसे दो बराबर हिस्सों में काट लेंगे। अब एक हिस्से के अन्दर एक छोटी मोटर लगा देंगे। अब कार्डबोर्ड के बीच में छेद बना देंगे और मोटर लगे टुकड़े को बोर्ड पर चिपका देंगे। मोटल के तारों को छेद की सहायता से पीछे की तरफ लगी बैटरी से जोड़ देंगे। बैटरी को कार्डबोर्ड के नीचे टेप और ग्लू से चिपका देंगें । अब बोर्ड के एक कोने में ऑन ऑफ स्विच लगा देंगे जिसको मोटर व बैटरी से जोड़ कर सर्किट पूरा कर देंगे। अब लोहे के स्टैंड को मोटर वाली गेंद में लगा देंगे और स्टैंड को सफेद रंग से पेन्ट कर देंगे। अब स्टैंड पर आठों ग्रहों की दूरी व स्थिति के अनुसार गेंद लगा देंगे और ग्रहों के रंगों के अनुसार इन गेंदों को रंग देंगे। इन ग्रहों को नाम देने के लिए स्लिप काटकर नाम लिखकर इनके पास चिपका देंगे।।

कार्डबोर्ड को आसमान जैसा दिखाने के लिए सिल्वर कलर के पेन से चमकीले तारे बना देंगे। सूर्य के चारों तरफ आग दिखाने के लिए चार्ट पेपर को नारंगी लाल कर सूर्य के चारों तरफ चिपका देंगे।।

क्रिया विधि – स्विच को ऑन ऑफ करते ही लोहे का स्टैंड घूमने लगता है जिससे उसमें

लगे सारे ग्रह सूर्य के चारों तरफ चक्कर लगाते दिखाई पड़ते हैं।।
सूर्य वाली गेंद में लगा बल्ब मॉडल को और आकर्षक बनाता है।।

साभार
डॉ नीतू शुक्ला (प्र.अ.)
मॉडल प्राइमरी स्कूल(अंग्रेजी माध्यम) बेथर प्रथम,
सिकंदरपुर कर्ण, उन्नाव।।

गतिविधि

खेलकूद आधारित गतिविधि– "स्पेलिंग"

—डॉ0 जितेन्द्र मौर्य,

बच्चे स्वभावतया खेलकूद में रूचि रखते हैं। पढ़ने की क्रिया में यदि खेल का समावेश कर दिया जाये तो विद्यार्थियों के लिए यह अत्यंत रुचिकर हो जाता है। शिक्षक बच्चे की मूल प्रकृति (खेलना) का प्रयोग उसके ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में कर सकते हैं। हमारे विद्यालय के बच्चों द्वारा एक खेल "स्टेचू" खेला जाता है। मैंने इसी खेल पर आधारित एक गतिविधि का प्रयोग बच्चों को मनोरंजन के साथ ही अंग्रेजी के शब्द सिखाने के लिए किया, उसका नाम "स्पेलिंग" रखा गया। बच्चों ने इसके प्रति उत्सुकता दिखाई तो पहला नियम बना कि कोई भी बच्चा अब स्टेचू की जगह स्पेलिंग खेलेगा और यदि कोई बच्चा स्पेलिंग कहता है तो दूसरा विद्यार्थी उसे अंग्रेजी के किसी शब्द की स्पेलिंग सुनाएगा।

प्रारम्भिक कुछ दिनों में बच्चों ने काफी जोश के साथ इस गतिविधि में योगदान दिया किन्तु कुछ दिनों बाद मैंने महसूस किया की बच्चे नये शब्द को न याद करके पुराने शब्द को ही बार–बार प्रयोग कर रहे हैं। इसके बाद दूसरा नियम बना कि जो विद्यार्थी स्पेलिंग कहेगा उसके साथ कोई एक अक्षर भी कहेगा जैसे T या H तो दूसरा विद्यार्थी उससे सम्बंधित अंग्रेजी के शब्द जैसे T से Turmeric या Tiger तथा H से Hen या Hut सुनाएगा। इस नये बदलाव ने बच्चों को पुनः प्रेरित किया कि वो कुछ नये शब्द याद करें। कुछ दिनों पश्चात एक संशोधन किया गया और तीसरा नियम बनाया गया कि जो विद्यार्थी स्पेलिंग कहेगा। वह अंग्रेजी का एक शब्द कहेगा और दूसरा विद्यार्थी उसके अंतिम अक्षर से

आरम्भ होने वाले किसी शब्द को बतायेगा। दूसरे विद्यार्थी द्वारा बताये गये शब्द के अंतिम अक्षर का प्रयोग कर प्रथम विद्यार्थी एक नया शब्द बतायेगा। इस प्रकार प्रत्येक विद्याथी को एक समय 5 शब्द की स्पेलिंग बतानी पड़ेगी, इस प्रकार की गतिविधि ने बच्चों के मन में नये शब्दों को सीखने के प्रति उत्सुकता जगाई।

डॉ0 जितेन्द्र मौर्य,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय मड़ईयाँ,
विकासखण्ड धानापुर, जनपद चंदौली

English Medium Diary

Play and Learn

Renu Pandey

Fun, fun, fun! This is one factor that really matters to the students. And that goes for students on the playground as well as those in the classroom.

Some educators believe that students learn best through play. Here are some ways we can make learning more fun with our students:

Play Games:-

Games are a great way to make learning fun. Not only do games play on the competitive nature of most children, but games also give them a goal to accomplish. When we win a game, we have really done something and we can feel good about our success.

here are a few games that require little to no preparation, and are super fun for young students.

Pinky Says: This concept is great for practicing listening skills. We can use it to review body parts ("Pinky says touch your head") or prepositions ("Pinky says put your foot on your chair").

Scavenger Hunt: Try sending our students on a scavenger hunt on our school grounds. We can tailor the items they are looking for to whatever unit we are in the process of teaching. If we want, we might have them look for items that begin with each letter of the alphabet, or items that are each color of the rainbow. We can have them look for certain shapes, too.

Treasure Hunt: we can send our students out with clues to solve (either based on grammar or content) and have each clue lead them to another. We have to hide clues outside before class.

Small World Play: Try collecting animal figures that show up in a book or story our class is reading, and let students retell the story using the figures. Try using this small world play when we do units on different subjects. Create a small scenario that includes play-sized items that represent those found in the real world.

Memory: Memory is great for learning vocabulary. Try putting a vocabulary word on one card and a picture showing the word on another. Or put synonyms or antonyms on two different cards. Lay all the cards on the table and have students try to remember where the matches are.

I know we have to face number of challenges but challenge make a task more interesting

Thanks

Renu Pandey,
Assistant Teacher,
Primary School Jarthal,
Block-Marhara, District-Etah.

Teachers, Teaching and ICT

"Technology won't replace teachers but teachers who use technology will probably replace the teachers who do not"

ICT:- Information and communication Technology is a technology that involves the way we search for information and the way we communicate . Normally it integrates communication , channels such as mobile, computer, laptop's, internet and so on for us to use in our everyday life.

The use of ICT in classroom teaching plays a very important role in teaching -learning process . As N.C.F.2005 focused on developing child centered approach and learning without burden makes learning a joyful experience and to remove stress from children. Student's learning is enhanced when the teachers integrates ICT into the learning environment-why ? How? What? When ?

If we talk about rural area students, teachers and classroom teaching. It become more and more joyful, effective and interactive also by using ICT. ICT offers new way of teaching. It enables the teachers to focus on each and every child and also offers a more comprehensive approach to assessment.

Shweta Shukla,
Assistant Teacher,
U.P.S. Laval,
Block-Mohanlalganj,
District-Lucknow.

प्रेरक प्रसंग

कल्पना चावला

शिक्षण संवाद

''सपने देखने के लिए हिम्मत और उन्हें पूरा करने के लिए जज्बा होना चाहिए, फिर राहें कितनी भी कठिन क्यों ना हो वह आसान लगने ही लगती हैं.....''

यह पंक्तियाँ बरबस ही सटीक बैठ जाती हैं कल्पना चावला पर। 1 जुलाई 1961 को हरियाणा के एक छोटे से गाँव करनाल में जन्म लेने वाली कल्पना के सपने आसमान छूने के थे और उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत से यह साबित भी कर दिया कि सपने पूरे होते हैं बस जरूरत होती है कठिन परिश्रम और धैर्य की।

कल्पना के पिता चाहते थे कि वह डॉक्टर या टीचर बनें लेकिन वह बचपन से अंतरिक्ष और खगोलीय जानकारियों में रुचि रखती थीं और इस विषय पर विभिन्न प्रश्न अपने पिता से पूछा करती थीं। प्रारंभिक शिक्षा करनाल के टैगोर बाल निकेतन से पूर्ण करने के बाद तथा पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज से एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद आगे की पढ़ाई टेक्सास विश्वविद्यालय से करने के लिए कल्पना अमेरिका चली गईं। 1994 में कल्पना अंतरिक्ष यात्री के तौर पर नासा द्वारा चयनित की गई तथा वहाँ के कार्यों को कड़ी मेहनत एवं पूर्ण समर्पण के साथ किया। आखिरकार 19 नवंबर 1997 को कोलंबिया अंतरिक्ष यान से कल्पना चावला की पहली अंतरिक्ष यात्रा प्रारंभ हुई जिसमें उन्होंने लगभग 375 घंटे अंतरिक्ष में बिताये और लगभग 65 मील की यात्रा की। भारतीय मूल की प्रथम महिला अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला ने अंतरिक्ष उड़ान के समय भारत के प्रति अपने प्रेम को कुछ यूँ शब्द दिया–''मैं भारत में करनाल से हूँ।''

कल्पना की दूसरी अंतरिक्ष यात्रा 16 जनवरी 2003 को प्रारंभ हुई। इस मिशन में कल्पना ने अंतरिक्ष में विभिन्न भौतिक क्रियाओं पर भारहीनता के सफल प्रयोग किए। 16 दिनों के सफल अभियान के पश्चात वापस लौटते समय पृथ्वी की कक्षा में प्रवेश करते ही 1 फरवरी 2003 को कोलंबिया अंतरिक्ष यान के टुकड़े–टुकड़े हो गए और इसके साथ ही भारत और विश्व ने कल्पना चावला जैसी कर्मठी और लगनशील अंतरिक्ष यात्री को खो दिया। इस दुर्घटना में कल्पना समेत सभी अंतरिक्ष यात्रियों की मृत्यु हो गई थी।

कल्पना चावला ने अंतरिक्ष की दुनिया में उपलब्धियाँ तो हासिल की हीं साथ ही साथ सपनों को जीने की राह भी दिखाई।

नासा ने कल्पना चावला के नाम पर एक सुपर कंप्यूटर समर्पित किया है।

आज कल्पना चावला तो नहीं हैं लेकिन उनके शब्द आज भी याद आते हैं– ''मैं किसी एक क्षेत्र या देश से बाधित नहीं हूँ। मैं इन सब से हटकर मानव जाति का गौरव बनना चाहती हूं।'' उन्होंने अपनी कही बात को सत्य साबित किया और मानव जाति के लिए सम्मान बनकर दिखाया।

मृदुला वैश्य,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय मीठाबेल,
विकास खण्ड–ब्रह्मपुर,
जिला–गोरखपुर।

सद्विचार

पंडित गोविन्द बल्लभ पंत

पंडित गोविन्द बल्लभ पंत जी का जन्म 10 सितम्बर 1887 को तत्कालीन उत्तर पश्चिमी राज्य (वर्तमान समय में उत्तराखंड– अल्मोड़ा) में हुआ था। गोविन्द बल्लभ पंत जी भारतीय स्वतंत्रता के महान स्वतंत्रता सेनानी थे।

पंतजी को आधुनिक भारत के निर्माताओं में से एक माना जाता हैं। हिंदी को सरकारी कार्य की भाषा (official language) बनाने के लिए भी इन्होंने बहुत संघर्ष किया।

देश में से जमींदारी प्रथा को दूर करने के लिए अन्य नेताओं के साथ मिलकर कार्य किया। इन्होंने नमक और सविनय अवज्ञा आंदोलन का भी नेतृत्व किया। काकोरी कांड का केस इन्होंने क्रांतिकारियों की ओर से लड़ा।

पंतजी उत्तर प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री थे। यह भारत सरकार में गृह मंत्री भी रहे। पंतजी ने विधि की शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की।विधि मे उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु इन्हें विश्वविद्यालय से लैम्सडैन की उपाधि प्रदान की गयी।

1957 में पंतजी को भारत रत्न से सम्मानित किया गया। इनके नाम से देश मे अनेक शिक्षण संस्थानों और चिकित्सालयों की स्थापना की गयी। इनकी मुत्यु 73 वर्ष की अवस्था में 7 मार्च 1961 को दिल्ली में हुई थी।

राजनेता होने के साथ –साथ पंत जी एक अच्छे विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री और साहित्यकार भी थे। इनके द्वारा लिखित वरमाला नाटक बहुत लोकप्रिय हुआ। पंतजी को फौलादी इच्छाशक्ति(A man with iron will)

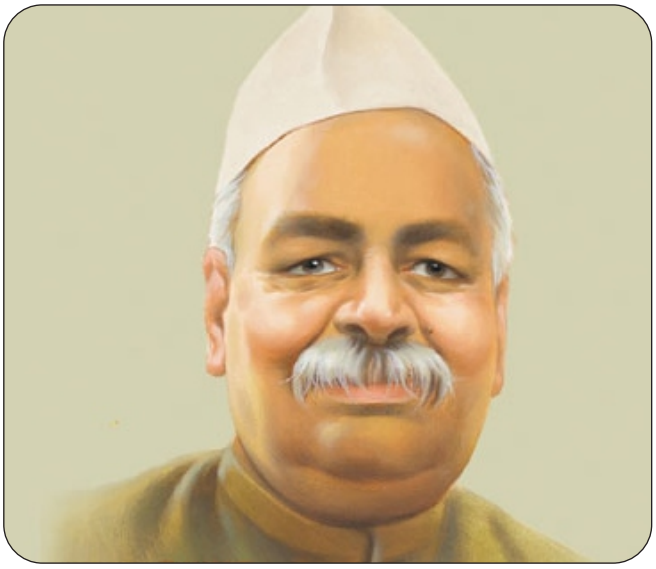

के व्यक्तित्व के रूप में जाना जाता है।

सदविचार–

1 पंतजी का मानना था कि लोगो के बीच धर्म और आर्थिक आधार पर विभेद करके उन्हें उनके अधिकारों से वंचित नहीं किया जाना चाहिए।

2 पंतजी ने कहा कि हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो प्रत्येक नागरिक को अपने अधिकार स्वयं प्राप्त करने हेतु सक्षम बना सकें।

3 मजबूत इच्छाशक्ति से ही व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

चंपक

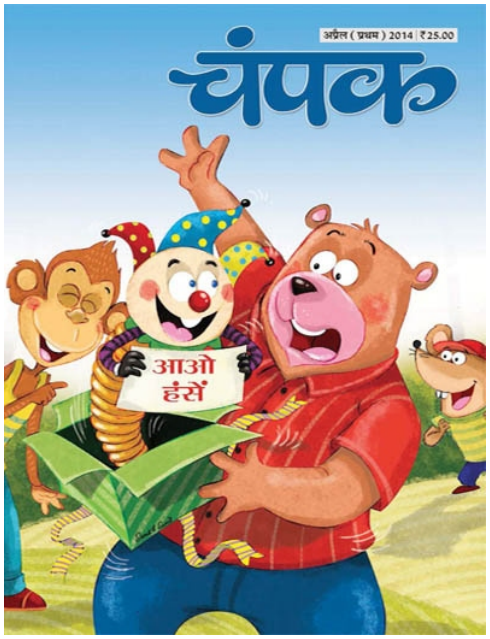

किसी कार्य को करना आवश्यक हो लेकिन उसमें रूचि न जग रही हो तब क्या उपाय किया जा सकता है? मेरे विचार से उस कार्य को निरन्तर करते रहना चाहिए। भले ही मन न करे, इच्छा न हो लेकिन फिर भी उसके लाभ के बारे में सोचकर ही निरन्तर करते रहना चाहिए। जैसे सुबह उठकर टहलने को ही ले लीजिए। सुबह जल्दी जगना, फिर एक लम्बी सैर के लिए निकलना। आरम्भ में बड़ा कष्टप्रद लगता है लेकिन जब आदत पड़ जाती है तब इसी में आनन्द आने लगता है और शरीर भी स्वस्थ रहता है। निरन्तरता है ही ऐसी चीज जो स्थायी गुण उत्पन्न करती है। बच्चों के लिए पढ़ना एक बड़ा उबाऊ काम होता है। वो स्कूल को ऐसी जगह मान लेते हैं जहाँ ले–देकर वही 150–200 पन्नों की 8–10 किताबों को उलटना–पुलटना होता है और मास्टरजी का याद करो काढ़ा गले से उतारना होता है। लेकिन बच्चों की मित्रता गुल्ली डंडा, लूडो, कंचों के अतिरिक्त किताबों से भी करायी जा सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि हमारे पास कुछ ऐसी किताबें हों जिन्हें पढ़ने के लिए बच्चे लालायित रहें। जैसे–स्थूल से सूक्ष्म की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर चलते हैं। वैसे ही बाल साहित्य से पाठ्यक्रम पुस्तकों की ओर चल सकते हैं। इसीलिए तो पत्रिका के विषम अंकों में हम बाल साहित्य की चर्चा अवश्य करते हैं। लेकिन अबकि किसी विशेष पुस्तक की चर्चा नहीं करेंगे। अबकि बात करेंगे एक पाक्षिक पत्रिका–चंपक की। चंपक से हम सभी परिचित हैं। आपने भी अपने बचपन में कभी न कभी चंपक अवश्य पढ़ी होगी। ये भी सम्भव है कि अपने घर में चंपक पढ़ने वालों में आप दूसरी पीढ़ी के हों। चंपक का प्रकाशन दिल्ली प्रेस से प्रत्येक 15 दिन में होता है। इसमें बच्चों को प्रेरणा देने वाली ढेरों कहानियाँ, कला के अवसर, कुछ कार्टून कथाएँ, बच्चों की रचनाएँ, पहेलियाँ और भी कई रोचक स्तम्भ होते हैं। चंपक जिस भी बच्चे के हाथ लग जाए तो समझो खजाना हाथ लग गया। इसकी सबसे अच्छी बात ये है कि ये चित्रों से परिपूर्ण होती है। इससे बच्चों का पढ़ने में मन लगता है और वो कुछ अच्छा भी सीखते हैं। वैसे तो इसका मूल्य 30 रूपए प्रति पत्रिका है। वर्ष में लगभग 26 अंक आते हैं अर्थात 780 रूपए प्रतिवर्ष। दुकान तक आने–जाने का खर्च अलग। लेकिन आप delhipress.in पर जाकर वर्ष भर का subscription मात्र 600 रूपए में ले सकते हैं। इसमें पत्रिका प्रतिमाह आपके दिए हुए पते घर/विद्यालय पर प्रतिपाक्षिक साधारण डाक से आएगी। इतने कम दामों में इस बालोपयोगी पत्रिका को मँगाना कोई घाटे का सौदा नहीं लगता। तो देर किस बात की आप बच्चों को चंपक पढ़वाना आरम्भ कर रहे हैं न?

□□□

पंक्षी

हम सब पंक्षी नील गगन के, गीत सुनाएँ प्यार के
उड़ें नभ में मगन हो के, नाचें पंख पसार के

मैं कोयल कहलाती हूँ, काली–काली दिखती हूँ
अपनी मीठी बोली से, सबके मन को भाती हूँ
कुहू–कुहू कर उड़ती फिरती, सबके मन बस जाती हूँ
मैं कोयल कहलाती हूँ।

मैं कौआ मतवाला हूँ, काला कोट पहनता हूँ
कभी पूज्यनीय मैं बन जाता, कभी अनादर हो जाता हूँ
गाँव–गाँव और गली –गली में, कांव–कांव चिल्लाता हूँ
मैं कौआ कहलाता हूँ।

हरा–हरा मैं तोता हूँ, हरी डाल पे बैठा हूँ
लाल नुकीली चोंच से मैं, मीठे फल खाता हूँ
टें टें टें टें कर के मैं, बहुत शोर मचाता हूँ
हरा–हरा मैं तोता हूँ।

मैं मनभावन मोर हूँ, पक्षियों में सिरमौर हूँ
सावन में जब नाचूँ मैं, देख लोग हर्षाते हैं
म्याऊँ–म्याऊँ बोल के मैं, सबके मन का चोर हूँ
मैं मनभावन मोर हूँ।

मैं प्यारी गौरैया हूँ, घर आँगन में रहती हूँ
फुदक–फुदक कर चीं चीं करके, दाने चुन–चुन खाती हूँ
बच्चों की मैं सखी हूँ प्यारी, उनकी सोन चिरैया हूँ
मैं प्यारी गौरैया हूँ।

हम सब पंक्षी नील गगन के, गीत सुनाएँ प्यार के
उड़ें नभ में मगन हो के, नाचें पंख पसार के।

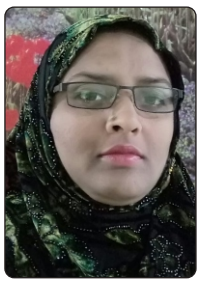

शमसुन निसा,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय पुकारी,
विकास क्षेत्र–नरैनी,
जनपद–बाँदा।

बाल कहानी

अर्पिता

शिक्षण संवाद

यह बात 4 वर्ष पहले की है
शहरी क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालय एक आवासीय कॉलोनी मे स्थित था। विद्यालय की इमारत से आस–पास के घर सटे थे इन्हीं घरों में से एक घर में अर्पिता की माँ घरेलू कार्य करती थी।
सुदूर क्षेत्र से 11 वर्षीय अर्पिता भी अपनी माँ के सहयोग के लिए अक्सर आ जाती थी। घर की परिस्थितियों की वजह से अर्पिता अभी तक विद्यालय नहीं जा सकी थी। अक्सर अर्पिता घर की छत से विद्यालय को देखती रहती थी और मध्यावकाश मे खेलते–कूदते बच्चों को देखकर मुस्करा उठती।
विद्यालय की शिक्षिका भी अक्सर छत पर खड़ी अर्पिता को देखतीं और सोचतीं शायद बच्ची पढ़ना चाहती हो ..शिक्षिका ने एक दिन अर्पिता को विद्यालय आने को कहा। अगले दिन अर्पिता अपनी माँ के साथ विद्यालय आयी तो शिक्षिका ने उसकी माँ से उसे पढ़ाने को कहा ...माँ ने कहा कि पढ़ना तो अर्पिता भी चाहती है लेकिन उसे अभी क,ख,ग भी नहीं आता ...उसे कक्षा– 1 के छोटे –छोटे बच्चों के साथ बैठने मे शर्म आयेगी.. . ऐसा अर्पिता सोचती है

शिक्षिका ने कहा–नहीं अर्पिता ऐसा नहीं होगा, हम तुम्हें तुम्हारी उम्र के बच्चों के साथ ही बैठाएँगे और तुम्हें क्या आता हैं? क्या नही? इसकी चिंता तुम बिल्कुल भी मत करो बस अपनी इच्छा शक्ति के साथ सीखने और पढ़ने की कोशिश करो।
उन्हीं दिनों विद्यालय में ड्राप आउट बच्चों के लिए सरकार की विशेष कक्षा की योजना भी आयी थी।
इन कक्षाओं के संचालन हेतु ब्रिज कोर्स हेतु अलग से पाठय पुस्तकें उपलब्ध करायी गयी थी।
शिक्षिका ने अर्पिता का प्रवेश कक्षा–4 मे लिया और उन्हीं पुस्तकों से अर्पिता को विशेष कक्षा के माध्यम से पढाना शुरू किया।
अपनी मेहनत और इच्छाशक्ति से शीघ्र ही अर्पिता मुख्य धारा के बच्चों के साथ जुड़कर कक्षा–5 में आ गयी।
अर्पिता पढ़ने के साथ–साथ विद्यालय की अन्य गतिविधियों में भी प्रतिभाग करती और शीघ्र ही अर्पिता विद्यालय की प्रिय छात्रा बन गयी और कक्षा–5 उत्तीर्ण कर (शहर के प्रसिद्ध 6 से 12 तक के इंटर कालेज) कक्षा–6 मे पहुँच गयी।
अर्पिता को विद्यालय से गये 4 वर्ष बीत गये ... एक दिन ग्रीष्मकाल मे अचानक अर्पिता अपनी शिक्षिका को स्कूल का बैग लटकाये स्कूल जाती हुई मिली ...कड़ी धूप में अर्पिता का चेहरा पसीने से दमक रहा था ...इस वर्ष वह हाईस्कूल की परीक्षा देने वाली थी ...शिक्षिका को बहुत खुशी हुई अपनी विद्यार्थी को खुश देखकर ....उनकी आँखों में आज अर्पिता की छवि छत पर खड़ी कातर दृष्टि से विद्यालय की ओर देखती उस नन्हीं बालिका की ही बनी हुई थी जो... अपने सपनों को जीना तो चाहती थी लेकिन बस पहल नहीं कर पा रही थी।
एक पहल ने अर्पिता की जिंदगी बदल दी ... शिक्षा की रोशनी ही हमारे सपनों को पूरा कर सही राह दिखाती हैं। इसलिए
सब पढ़ें सब बढ़ें

डॉ0 अनीता मुदगल,
श्री श्रद्धानन्द बेसिक प्राथमिक पाठशाला,
झींगुरपुर,
नगर परिषद, मथुरा।

शीर्षासन

तहरी का स्वतंत्र राज

– विद्यासागर

शिक्षण संवाद

तहरी, एक अवधी व्यंजन है। इसका इतिहास विश्व में अन्यत्र नहीं मिलता इसलिए यह विशुद्ध भारतीय है। इसे बनाना खिचड़ी की तरह ही आसान होता है। तहरी बनाने के लिये आलू, गोभी, मटर, टमाटर, सोयाबीन, घी या तेल, मसाले तथा नमक का प्रयोग किया जाता है। शायद इसीलिए मध्याह्न भोजन प्राधिकरण उ०प्र० ने तहरी की लोकप्रियता से प्रभावित होकर इसे अपनी आहार तालिका में जगह दी। इसे स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को हफ्ते में दो दिन बड़े चाव से खिलाया जाता है।

शामली गाँव के एक छोर पर प्राइमरी स्कूल है जिसके हेडमास्टर हैं राम औतार जी। स्कूल का खाना यूँ तो ग्राम प्रधान जी बनवाते हैं पर देख–रेख हेडमास्साब के जिम्मे है। जिले के सुदूर इलाके में स्कूल होने के कारण प्रशासन का भय लगभग न के बराबर रहता है। फिर ग्राम प्रधान तो गाँव का स्वतंत्र राजा होता है ..राजा। इसलिए स्कूल के मीनू में अधिकतम तहरी का ही राज रहता है कभी–कभार रोटी–सब्जी आदि की भी मेहमानी हो जाता है।

आज सुबह हेडमास्टर साहब को कहीं से खबर मिली कि चेकिंग होने वाली है। इसलिए भयभीत हेड मास्टर साहब ने प्रधान जी को मोबाइल फोन डायल कर दिया। लेकिन हमेशा की तरह इस बार भी पलटकर राजसी जबाब आ गया।

. हम..देख.. लेबे..केहिके.. पास ..हमसे..बड़ा.. दम है..बनै ..दो ..तहरी.

हूँ.. हेड..मसटरी..का ..होई.. गई..???

घबराए और गुस्साए हेड साहब

अब गुस्सा किस पर उतारें। सब अपने से कमजोर पर ही हावी रहते हैं। रसोईयों के ऊपर भन्नाने लगे। रसोईघर को साफ–सुथरा रक्खो। सिर के बाल ढककर रक्खो। नाखूनों में नाखून पालिश लगाकर न आया करो। लेकिन वह तो राज दरबारी है।हेड मास्टर की सुनती ही कहाँ हैं? चेकिंग आती है तो आये, उनकी बला से। वह रसोइया भी कम कलाकार न थीं। हेडमास्साब की सारी बातें हवा के झोंके के समान समझती थीं। ''तहरी अच्छे से बनाना'' हेडमास्टर साहब रोज की तरह ऑर्डर बजाकर कक्षा में चले आये। कक्षा में आकर लगे बच्चों को कुपोषण और पोषण में अन्तर बताने। सोयाबीन में सबसे अधिक प्रोटीन पाया जाता है। बच्चे मुँह दाबकर हँसे, परन्तु शामली की तहरी से प्रोटीन तो नदारद है। तभी कक्षा का खुरपेंची छात्र कलुआ खड़ा हुआ। अंगुली दिखाई तो हेडमास्साब ने जाने दिया। इसके बाद फिर से पढ़ाने में तल्लीन हो गए। थोड़ी देर बाद मोबाइल देखे, सोचे लंच होने में थोड़ा समय है। तब तक दूसरी कक्षा में भी कुछ पढ़ा दूँ। पहली वाली कक्षा से निकलकर दूसरी कक्षा में जाने लगे। एकाएक नजर रसोईघर के तरफ गई। दोनों रसोईया, माधुरी और ममता उनकी तरफ दौड़ते हुए आ रही थीं। माधुरी तो पसीना से तरबतर थी, मारे डर के ममता का भी बुरा हाल था। अनचाही समस्या का सामना करने के लिए हेडमास्साब बाहुबली की तरह खड़े हो गए।

कुछ बोलोगी काहें ..हकर–हकर ..हाँफ रही हो।

ह..ह..ह..???

मास्साब.. त..ह..री..में छिप..छिपकली..गिर गई है..

अब तो हेडमास्साब की पेशानी पर बल पड़ा।

तुम लोग ..क्का.. कर रही थी। आँगनबाड़ी में .. चउरा कर रही थी का?

न..नहीं.. ह..ह थोड़ी देर..

जाओ... उसे फेंक दो, दोसर बनाओ।

पर मास्साब परधान..?

हेडमास्साब के आँखों की चमक ने हुक्म फरमा दिया। परन्तु अन्दर ही अन्दर रुह काँप रही थी।

यह सभी बातें विद्यालय के पास में ही ताश खेल रहे

प्रधान जी के दरबारियों के कान तक पहुँच चुकी थी। बिना देर किए ही वह सब विद्यालय में आकर धमक पड़े। अधिकारिक राजसी आवाज में कड़ककर बोले– बड़े–बड़े जानवर तोड़ डाले कुछ नहीं भा, एक छिपकली में का है। निकालकर फेंक दो और लरीकों को बाँटों खाना।
हेडमास्साब.. ज्यादा ..हिटलरी ना दिखाओ यहाँ।
आननफानन में मास्साब ने बी.एस.ए. दफ्तर में मोबाइल फोन घनघना दिया और तहरी वाले भगौने पर ढक्कन रखकर बैठ गए। जिरहबाजी शुरू हो गई। परधान जी तक खबर पहुँची तो वे भी सेनापति की तरह मोर्चा सम्भालने पहुँचे कुछ देर में विभागीय लोग पहुँच गए। तहरी नहीं बँटी। मुस्टंडे राज दरबारी और परधान राजा भी समय की नजाकत को समझते हुए शांत हो गये। विभागीय अधिकारियों ने तहरी को बगैर जाँच फेंकना अनुचित समझा। जाँच के लिए खाद्य विभाग के निरीक्षक बुलाए गए। तहरी का सैम्पल छिपकली समेत ट्रांसपैरेंट में भरा गया। उस दिन बच्चों को लइया और बिस्किट्स खाने को दे दिया गया।

एक–आध हफ्ते बाद एक दिन हेडमास्साब अपने आफिस में बैठे, रजिटर में कुछ कर रहे थे। तभी चुन्नू, बटेसर की पंचायत लेकर पहुँचा। हेडमास्साब ने बात पूछी। तो चुन्नू ने बताया कि बटेसर ने उसके भाई मुन्नू की छिपकली छीन ली है। पहले तो ध्यान नहीं दिया। पर अचानक मास्साब का माथा ठनका, लपककर बटेसर के जेब से छिपकली निकाली।हाय..द इ..या..। यह तो सचमुच असली पलासटिक का.
फिर हेडमास्साब ने षड्यंत्र की जड़ कुरेदी।
चुन्नू–मुन्नू ने पूरी रिपोर्ट दे दी। कलुआ ने ऐही माफिक मेला से पलास्टिक की छिपकली खरीदी थी और रसोई घर के जंगले से टिपकर, भगौने में उसे फेंक दिया। जब दोनों चाची, तहरी ठंडा होने के लिए थोड़ा–सा ढक्कन खुला छोड़कर पंचायत में जुटी रहीं। हेडमास्साब ने माथा पकड़ लिया। बच्चे तो बच्चे ..फाँसी की सजा थोड़े ही दी जा सकती है। फिर भी मास्साब ने कलुआ के बाबू को बुलवाया। कलुआ को उसके बाबू ने बहुत डाँटा और एक जोर का थप्पड़ मार दिया। यह देख आखिरकार हेडमास्साब का दिल पसीज गया और कलुआ को समझाने लगे। कलुआ रुआंसा हो गया और लगा बताने। वही रोज–रोज बिना टमाटर और बिना सोयाबड़ी की तहरी। जब तक भूख रहती है तब तक तो सब खाते हैं बाद में कुत्तों का पेट भरता है। हेडमास्साब निरुत्तर थे पर उनके हाथ में कुछ न था।

कुछ ही दिनों में खाद्य निरीक्षण दल ने बी.एस.ए. साहब को रिपोर्ट सौंप दी। तहरी विषाक्त नहीं थी, पर खाद्य पदार्थ में प्लास्टिक के कण पाये गए। जाँच निपटाने के लिए हेडमास्टर साहब को बी. एस.ए.ऑफिस तलब किया गया। राम औतार जी ने पूरी राम कहानी बता डाली। कलुआ की काबिलियत पर बी.एस.ए. साहब जोर से हँसे तो हेडमास्साब पेशोपेश में पड़ गये। उन्हें लगा कि एक इंक्रीमेंट गया। पर साहब ने आश्वस्त किया कि आप चिंता न करें, आपके साथ–साथ कल्लू प्रसाद के साथ भी न्याय होगा।

इस घटना के बाद शामली गाँव का स्कूल गुलजार हो गया है। अब विद्यालय में फल और दूध भी बँटने लगा है और इसके बहाने ही सही बच्चे आने लगे हैं। अब कल्लू का मन खाने से अधिक पढ़ने में लगने लगा है। जो चीज आसानी से मिलने लगती तो उसके प्रति कुण्ठा उत्पन्न नहीं होती। ममता और माधुरी भी हेडमास्साब के इशारे पर एक पैर पर खड़ी रहती हैं। ग्रामप्रधान की हेकड़ी गायब है। स्कूल के भोजन व्यवस्था की बागडोर ग्रामप्रधान से छीनकर हेडमास्साब को सौंप दी गई है। हेडमास्साब मीनू के अनुसार खाना बनवाते हैं और खुद भी बच्चों के साथ खाते हैं। तहरी से सर्दियों में मटर और गोभी की महक आती है तो गर्मियों में सोयाबीन की पौष्टिकता झलकती है।

लेखक
विद्या सागर,
प्रधानाध्यापक,
प्रा०वि०–गुगौली,
विकास खण्ड–मलवां
जनपद–फतेहपुर।

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/02/motivational-force.html

प्रेम–A Motivational Force

दो अलग विद्यालय
दो अलग विद्यार्थी
दो अलग पद
किंतु परिस्थिति एक और प्रतिक्रिया भी एक

2014 में मैं शिक्षामित्र के पद पर कार्यरत थी। स्कूल की छुट्टी हो चुकी थी किंतु किसी कारणवश मैं स्कूल में ही रुकी हुई थी। मेरे साथ स्कूल के कुछ बच्चे भी वहीं खेल रहे थे। तभी अचानक उनमें से एक बच्चे संदीप को माथे में चोट लग गई काफी खून निकलने लगा। मैं तुरंत उसको लेकर नजदीक के डॉक्टर के पास गई। डॉक्टर ने कहा खून को रोकने के लिए चोट में दो टाँके लगाने पड़ेंगे। मैंने सहमति दे दी। मैं सोच रही थी कि अब यह बच्चा बहुत रोएगा। मैंने उसे प्यार से समझाया कि डरने की कोई बात नहीं है मैं तुम्हारे पास हूँ, रोना मत। मुझे बेहद आश्चर्य हुआ कि टाँके लगाने की उस प्रक्रिया के दौरान उस बच्चे ने उफ्फ तक नहीं की। स्वयं डॉक्टर भी यह देखकर बहुत हैरान था। मैंने सोचा की यह लड़का है, इसमें सहनशक्ति शायद ज्यादा है इसीलिए यह नहीं रोया। बच्चा ठीक हो गया था, बात आई गई हो गई। मैं सब कुछ भूल गई।

बात फरवरी 2019 की ही है। मैं अब एक अन्य स्कूल में सहायक अध्यापिका के पद पर कार्यरत हूँ। एक 7 वर्ष की छोटी सी बच्ची दिव्या जब पानी पीने के लिए आई तो नल का हत्था किसी प्रकार उसके माथे में लग गया। माथे से बहुत खून बहने लगा। घबराए हुए बच्चे उसे लेकर मेरे पास आए। उसके माथे को दबाए हुए मैं तुरंत उसे डॉक्टर के पास ले गई। डॉक्टर ने जख्म देखकर कहा एक टाँका लगाना पड़ेगा तभी यह चोट जल्दी ठीक हो पाएगी। मैंने दिव्या की ओर देखा और डॉक्टर को टाँका लगाने की सहमति दे दी। मुझे लग रहा था कि दिव्या को संभालना बहुत मुश्किल होगा। छोटी सी बच्ची है बहुत रोएगी। मैंने उसे प्यार से समझाया– बेटा, तुम रोना मत, डरना मत, मैं तुम्हारे पास हूँ। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब दिव्या ने भी इस पूरी प्रक्रिया के दौरान उफ तक नही किया। डॉक्टर भी देखकर हैरान रह गया। बोला कि यदि यह बच्ची अपने माँ बाप के साथ आती तो मेरा पूरा क्लीनिक रो–रोकर सिर पर उठा लेती।

अब इसके विपरीत परिस्थिति देखते हैं। यदि कक्षा में हम इनमें से किसी बच्चे के हल्की सी चपत लगा देते हैं तो यही बच्चे पूरे आँसुओं के साथ जार–जार रोते हैं।

घोर आश्चर्य! क्या एक हल्के से थप्पड़ की चोट उन डॉक्टरी टाँकों(जोकि बिना सुन्न किये लगाये गए) से भी अधिक है??

असली सार इसी में निहित है कि बच्चा शारीरिक चोट नहीं बल्कि मानसिक चोट व अपमान के कारण रोता है। एक पूरा व्यक्तित्व समाया है बच्चे में जिसे सबके समक्ष अपमानित होने पर आघात पहुँचता है।

अध्यापक का प्रेम, अध्यापक का सकारात्मक मोटिवेशन बच्चे को असंभव करने हेतु प्रेरित करता है, बच्चे के मन में स्कूल के प्रति, अध्यापकों के प्रति प्रेम व आदर जगाता है, उन्हें प्रतिदिन विद्यालय आने हेतु प्रेरित करता है। अध्यापक का मात्र एक इनपुट विद्यार्थियों से प्रेम.....विद्यालय हेतु अनेक आउटपुट दे जाता है।

Be a Valentine to your students. It will create a lovable progressive society.

सभी अध्यापकों को सादर समर्पित।

लेखिका
रीता गुप्ता,
सहायक अध्यापक,
मॉडल प्राइमरी स्कूल
बेहट नंबर–एक,
जनपद–सहारनपुर।

माह का मिशन

8 मार्च को पूरे विश्व में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है जोकि इस बार भी मनाया गया। सभी महिलाओं को उनका अधिकार एवं सम्मान दिलाने की शपथ हम सबको लेनी होगी तभी इस समाज और संस्कृति का उत्थान सम्भव है। कोई दिवस मना लेने भर से हमारी जिम्मेदारी पूर्ण नहीं हो जाती। आवश्यकता है सतत प्रयास की जो जरूरतमन्द महिलाओं को उनके सपने को सच करने में सहायक सिद्ध हो।

इस बार महिला दिवस के साथ ही बहुत बड़ा त्यौहार होली भी है।

माह के मिशन के रूप में आपने अपने विद्यालय में जो भी गतिविधियाँ करवायी हों। उसे संकलित करके कोलाज के रुप में हम तक पहुँचाएँ जिससे हम अगले माह की पत्रिका में उसे स्थान दे सकें। होली आपसी प्रेम और सद्भाव का रंगों भरा त्यौहार है। सभी बच्चों को यह निश्चित रूप से बताएँ और समझाएँ की रंगों का उपयोग बहुत ही सावधानीपूर्वक करें। किसी को हानि न पहुँचाएँ और रंगों के साथ सुरक्षित होली का त्यौहार अपने प्रियजनों के साथ मनाएँ।

लगभग पूरे प्रदेश में इस वक्त वार्षिक परीक्षाएँ संचालित हैं तो जो भी गतिविधियाँ कराएँ हम तक अवश्य पहुँचाएँ।

सभी साथियों को महिला दिवस और होली की रंगभरी ढेर सारी शुभकामनाएँ।

बात शिक्षिकाओं की

मेरा अनुभव एवं संदेश

श्रीमती पूजा भार्गव,
प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय बरनई(अंग्रेजी माध्यम),
विकास खण्ड–भावलखेड़ा,
जनपद–शाहजहाँपुर(उ.प्र.)।

मेरा जन्म उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में हुआ। मेरे पिता श्री गोविंद प्रसाद भार्गव शहर के एक प्रतिष्ठित पुस्तक विक्रेता थे और माता श्रीमती रानी भार्गव एक उच्च शिक्षित M.A. Economics, B.Ed. महिला थीं ।

जीवन निर्माण में माता–पिता और गुरु की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और मैं भाग्यशाली हूँ कि मुझे इन तीनों का आशीष मिला।
मेरी माँ एक कुशल गृहिणी थी पर जरूरत पड़ने पर उन्होंने सदैव व्यापार में मेरे पिता का कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया। वो मेरे सामने एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत थीं कि नारी की भूमिका सिर्फ रसोई घर तक सीमित नहीं हैं वरन उसे हर क्षेत्र का ज्ञान होना चाहिये। उन्होंने सदैव मुझे उच्च शिक्षित होकर अपने पैरों पर खड़ा होने को प्रेरित किया।
12वीं करने के बाद मेरे पिता की इच्छा थी कि मैं विज्ञान विषय में उच्च शिक्षा प्राप्त करूँ। उन्होंने मुझे आगे बढ़ने का हौसला दिया। मैं पहली बार घर से बाहर जा रही थी पिताजी के साथ कानपुर एडमिशन के लिये, वे हर बार मुझे कॉलेज और हॉस्टल लेकर गये और आए, उनकी व्यस्तता के कारण ये सम्भव नहीं था।
उन्होंने मुझसे कहा––"मैं तुमको रास्ते दिखा रहा हूँ, अब हमेशा तुमको अकेले आना और जाना होगा, मैं हर बार तुम्हारे साथ नही आ पाऊँगा।" आज जब उस दिन को याद करती हूँ तो यह समझ सकती हूँ कि बाहरी दुनिया की सभी परिस्थितियों का सामना करके मुझे मजबूत बनाने का उनका यह एक तरीका था।
मुझे अकेले भेजने के लिये उन्होंने कितनी हिम्मत रखी होगी और मुझ पर कितना विश्वास किया होगा? क्योंकि उस समय न तो परिवहन आज की तरह सुविधापूर्ण था और न हर रास्ते में बात करने हेतु mobile जैसी कोई सुविधा हुआ करती थी।
मेरे शैक्षिक जीवन का महत्वपूर्ण समय 1996–1998 का रहा है, जब मैंने M.Sc. की। मैं हमेशा से एक अध्ययनशील परंतु औसत दर्जे की छात्रा थी। मेरे मन में सदैव कुछ करने की इच्छा थी उस समय मेरा परिचय श्री दिवाकर सिंह संधू सर से हुआ। इनके बारे में विख्यात था कि D.A.V. कॉलेज का topper उनकी कोचिंग से होता है। सर के निर्देशन और मेरी मेहनत का परिणाम यह रहा कि M.Sc. फाइनल में 1998के batch में सर्वाधिक अंक 72% मुझे प्राप्त हुए और साथ ही इस सत्य से मेरा साक्षात्कार हुआ कि "दृढ़ इच्छा शक्ति, लगन और सतत प्रयास के बल पर इंसान सब कुछ प्राप्त कर सकता हैं।

मेरा विवाह 2001 में आगरा निवासी श्री पंकज भार्गव के साथ हुआ। विवाह के पश्चात मैंने B.Ed. किया यद्यपि घर की जटिल परिस्थितियों और 3 वर्ष की पुत्री के साथ यह कठिन था, पर पतिदेव के सहयोग और प्रोत्साहन से यह सम्भव हो पाया। वे मेरे हर फैसले का सम्मान करते हैं और जरूरत पड़ने पर मेरा मार्गदर्शन करते हैं।
वर्ष 2010 में शाहजहाँपुर में मुझे शिक्षिका बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।
मैं भाग्यशाली हूँ कि ईश्वर ने मुझे एक ऐसी नौकरी का अवसर दिया है जहाँ मैं समाज सेवा भी कर पाती हूँ।
2015 से मैं एक प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापिका के पद पर कार्यरत हूँ। इस वर्ष से मेरा स्कूल अंग्रेजी माध्यम से संचालित हो रहा है। 9 वर्षों में मैंने यह अनुभव किया है कि हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं की शिक्षा के प्रति आज भी उतनी जागरूकता नहीं है। घर के हर छोटे–बड़े कार्य और जरूरतों के लिये उनको जब तब विद्यालय आने से रोक दिया जाता है।
मैं बालिकाओं के माता–पिता से निरंतर सम्पर्क करके उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य के लिये जागरूक करती हूँ जिससे वे भविष्य में एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकें।
मेरा विश्वास–
मेरा मानना है कि "जिन्दगी ईश्वर का दिया एक अनमोल तोहफा है, जो हम सभी को एक ही बार मिलता है। इसलिए हम सबका ये कर्तव्य है कि हम जीवन के प्रत्येक दिन प्रत्येक क्षण को सकारात्मक सोच के साथ जियें।हमें जो कुछ भी ईश्वर से मिला है, उन संसाधनों का प्रयोग मानवता के कल्याण हेतु करें तो निश्चय ही हमारा जीवन सफल और सुखमय हो जाएगा।"

कस्तूरबा विशेष

बालिका शिक्षा में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान

शिक्षण संवाद

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सबसे बुरा हाल शिक्षा का था। उसमें भी बालिका शिक्षा की स्थिति अत्यंत ही दयनीय थी। बालिकाओं को लोग विद्यालय भेजना पसन्द नहीं करते थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रथम सर्वे में यह बात सामने आयी थी कि बालिका साक्षरता दर मात्र 8–9 फीसदी ही थी। देश के संविधान में यह व्यवस्था की गयी है कि राज्य किसी भी नागरिक के विरुद्ध धर्म, वंश, लिंग, जाति, जन्मस्थान अथवा किसी भी आधार पर विभेद नहीं करेगा। इससे बालिकाओं को शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति के समान अवसर उपलब्ध तो होने लगे लेकिन सदियों से शैक्षणिक रूप से पिछड़ने के कारण अब भी उन्हें पुरुषों को समान लाना चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। यदि पुरुषों की तुलना में महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति अच्छी नहीं रहे तो निश्चित ही इसका प्रभाव देश के विकास पर पड़ेगा।

इसके साथ ही महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन लाने में भी शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक महिला के शिक्षित करने का तात्पर्य है कि दो पूरे परिवार को शिक्षित करना।

लेकिन वर्तमान समय में अभी भी बालिका साक्षरता की दर कम है, जिसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं –

1–लैंगिक भेदभाव

2–लड़कियों का घर के कार्यों में लगे रहना।

3–माता–पिता के कार्य पर जाने के बाद छोटे भाई बहन को संभालना

4–ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों की पढ़ाई को अनिवार्य नहीं मानना।

5–बेटियों को पराया धन मानने की मान्यता।

6–सामाजिक सुरक्षा का अभाव।

7–विद्यालयों का निवास स्थान से दूर होना।

भारत सरकार के बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये ''बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ'' के महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट के सफल प्रयास को मूर्त रूप देने में केंद्र सरकार की'' कस्तूरबा गाँधी आ०बा० विद्यालय'' ने बालिकाओं की शिक्षा में अमूल्य योगदान दिया है।

बालिकाओं की साक्षरता दर में कमी का जो मुख्य कारण हैं, उसमें कस्तूरबा गांधी आवसीय बालिका विद्यालय ने उन सारे कारणों, कमियों और समस्याओं को दूर करते हुए बालिकाओं के लिये समग्र समुचित और सुरक्षित शिक्षा की व्यवस्था कर बालिका शिक्षा में मील का पत्थर साबित हुआ है।

कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय समाज के लिये एक उम्मीद की किरण है जहाँ से शिक्षा से वंचित छात्राएँ शिक्षा प्राप्त करके शिक्षा व समाज के मुख्य धारा से जुड़ जाती हैं।

आज हमारे जनपद कुशीनगर में आकांक्षा समिति कुशीनगर की अध्यक्षा श्रीमती ममता सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री अरुण कुमार, जिला समन्वयक(बालिका शिक्षा), श्री रमाशंकर यादव जी के विशेष प्रयासों से कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय, कुशीनगर की छात्राएँ हर क्षेत्र में विकास के पथ पर अग्रसर हैं एवं कान्वेंट स्कूल के बच्चों को मात देते हुए शिक्षा के साथ–साथ अन्य गतिविधियों जैसे –जूडो कराटे, सामान्य ज्ञान, रंगोली, मेंहदी, चित्रकला, पोस्टर व वॉल पेंटिंग, सिलाई आदि क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्राप्त कर रही हैं।

कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय, कुशीनगर का समस्त शैक्षणिक स्टाफ ''बा'' की बेटियों को समग्र, समुचित और सुरक्षित शिक्षा देने के लिये प्रतिबद्ध और समर्पित है ताकि समाज के अति पिछड़े और वंचित क्षेत्रों से आने वाली बेटियाँ भी शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम गढ़ सकें।

रमाकांत जायसवाल
P. T.T.
कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय
विकास खण्ड–तमकुहीराज
जनपद–कुशीनगर।

मील का पत्थर बनता श्यामपट्ट कार्य

शिक्षण संवाद

उत्तर प्रदेश के बेसिक प्राथमिक व पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में कमजोर हो रही शिक्षा की नींव को सुदृढ़ करने के लिये मिशन शिक्षण संवाद एक ही नहीं वरन कई लक्ष्यों को एक साथ उदीप्त कर रहा है।

दैनिक श्यामपटट संदेश कार्य पहले प्राथमिक और जूनियर वर्ग के लिये अलग अलग होते थे किन्तु 01 जनवरी 2019 से अब प्राथमिक व जूनियर संयुक्त रूप में होते हैं। प्रदेश के सभी जनपदों के अधिकांश विद्यालयों में श्यामपटट संदेश कार्य को प्रसिद्धि मिल रही है। इससे छात्रों की नैतिक क्षमता विकसित हो रही है।प्रतिदिन ज्ञान से पूर्ण एवं नैतिकता से सम्बंधित सुविचार, शिक्षकों एवं छात्र–छात्राओं को अपने जीवन में उतारने के लिये प्रेरित करता है। जिस प्रकार इंसान का चरित्र उसके विचारों से बनता है ठीक उसी प्रकार हमारे विद्यालयों के छात्रों के भविष्य एवं चरित्र निर्माण में प्रतिदिन श्यामपट सुविचार का बहुत योगदान मिल रहा है।

प्रतिदिन छात्रों को एक नया अंग्रेजी शब्द मिलता है जिसकी हिन्दी व संस्कृत अर्थ के साथ उनके मस्तिष्क में शब्द भण्डार की वृध्दि होती है। इसके अलावा प्रतिदिन किसी न किसी रूप में महत्वपूर्ण होता है तथा इतिहास में दर्ज होता है।

विशेष–जो की श्यामपट सन्देश में प्रतिदिन क्या और क्यों खास है उसकी जानकारी कराता है। विशेष से छात्र किसी महापुरुष का जन्म दिवस, पुण्यतिथि, महत्वपूर्ण दिवस व अन्य एतिहासिक जानकारी प्राप्त करते हैं।

इसके अलवा प्रतिदिन प्राथमिक व जूनियर वर्ग के लिये एक एक सामान्य ज्ञान का प्रश्न दिया जाता है जो सरल एवं समझ स्तर का होता है।यथासम्भव पाठ्यक्रम की पुस्तकों से ही सम्बन्धित होता है। इस तरह छात्रों को रोज दो प्रश्न अधिगमित हो जाते हैं। किस तारीख को कौन सा दिवस है यह भी छात्रों एवं शिक्षकों को मालूम होता रहता है।

नियमित अन्तराल पर वर्ग पहेली भी श्यामपट में प्राप्त होती है जिससे छात्रों की तार्किक, बौद्धिक एवं कल्पना क्षमता विकसित होती है।छात्र पहेली का हल खोजने के लिये आपने साथियों, परिजनों व अन्य सम्बन्धियों से भी पूछते हैं। इस तरह पहेली बच्चों की झिझक दूर करने में भी मददगार साबित होती है। छात्र वर्ग पहेली को हल करने में रुचि लेते हैं तथा उत्तर जानने के लिये भी उत्सुक रहते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण रोचक तथ्य होते हैं।जिनसे छात्र–छात्राएँ ही नही वरन उनके शिक्षक भी नयी–नयी आश्चर्यजनक जानकारियों से लाभान्वित होते हैं।

मिशन शिक्षण संवाद के अन्तर्गत श्यामपट सन्देश बहुत ही महत्वपूर्ण, ज्ञानपूर्ण एवं रुचिपूर्ण है जिसका रोज सुबह शिक्षकों को इन्तजार रहता है। प्रदेश के साथ ही देश के कई अन्य राज्यों में भी ट्विटर, फेसबुक के मध्यम से यह प्रसारित किया जाता है। मिशन शिक्षण संवाद के वाटसएप समूहों के माध्यम से प्रत्येक विद्यालय के शिक्षकों तक यह सुबह में ही पहुँच जाता है। 02 फरवरी 2019 को श्यामपट कार्य संदेश के 300 संदेश पूर्ण हो चुके हैं।

सचिन कुमार,
सहायक अध्यापक
पूर्व माध्यमिक विद्यालय शरीफपुर
संभल

योग मुद्रा

शिक्षण संवाद

1. ज्ञान मुद्रा–
अपने हाथ की तर्जनी उँगुली व अँगूठे को मिलाने से जो मुद्रा बनती है उसे ज्ञान मुद्रा कहते हैं।
लाभ – इस मुद्रा को लगाने से स्मरण शक्ति बढ़ती है, अनिद्रा व क्रोध आदि दूर होता है।

2. वायु मुद्रा–
अपने हाथ की तर्जनी उँगुली को मोड़कर अँगूठे की जड़ में लगाने से जो मुद्रा बनती है उसे वायु मुद्रा कहते हैं।
लाभ – इस मुद्रा को लगाने से साईटिका, गठिया, लकवा, जोड़ों का दर्द आदि सभी वात रोग ठीक होते हैं।

3. आकाश मुद्रा –
अपने हाथ की मध्यमा उँगुली को अँगूठे के अग्रभाग से लगाने पर जो मुद्रा बनती है उसे आकाश मुद्रा कहते हैं।
लाभ – इस मुद्रा को लगाने से मन की शांति मिलती है व हड्डियों की कमजोरी भी दूर होती है।

4. शून्य मुद्रा –
अपने हाथ की मध्यमा उँगुली को अँगूठे के जड़ में लगाकर अँगूठे से धीरे से दबाने से जो मुद्रा बनती है उसे शून्य मुद्रा कहते हैं।
लाभ – इस मुद्रा को लगाने से कान के सभी रोग ठीक होते हैं।

5.पृथ्वी मुद्रा –
अपने हाथ की अनामिका उँगुली को अँगूठे से मिलाने पर जो मुद्रा बनती है उसे पृथ्वी मुद्रा कहते हैं।
लाभ – इस मुद्रा को लगाने से दुबलापन दूर होता है व शरीर में स्फूर्ति आती है।

7 .वरुण मुद्रा –
अपने हाथ की कनिष्ठा उँगुली को अँगूठे से मिलाने पर जो मुद्रा बनती है उसे वरुण मुद्रा कहते हैं।
लाभ – इस मुद्रा को लगाने से शरीर में जल की कमी दूर होती है, रूखापन नष्ट होता है, त्वचा चमकीली व मुलायम होती है व चर्मरोग दूर होता है।

6 . सूर्य मुद्रा –
अपने हाथ की अनामिका उँगुली को अँगूठे के जड़ में लगाकर अँगूठे से धीरे से दबाने से जो मुद्रा बनती है उसे सूर्य मुद्रा कहते हैं।
लाभ – इस मुद्रा को लगाने से मोटापा तेजी से घटता है, कोलेस्ट्रॉल कम होता है, थायराइड में भी फायदा होता है व पाचन क्रिया सही रहती है।

8. जलोदर नाशक मुद्रा –
अपने हाथ की कनिष्ठा उँगुली को अँगूठे के जड़ में लगाकर अँगूठे से धीरे से दबाने से जो मुद्रा बनती है उसे जलोदर नाशक मुद्रा कहते हैं।
लाभ – इस मुद्रा को लगाने से पेट में पानी भर जाना व शरीर में सूजन ठीक होती है।

9. सहजशंख मुद्रा –
अपने दोनों हाथों की ऊँगुलियों को आपस मे फँसाकर हथेलियाँ दबाकर तथा दोनों अँगूठों को बराबर सटाकर रखने से जो मुद्रा बनती है उसे सहजशंख मुद्रा कहते हैं।
लाभ – इस मुद्रा को लगाने से हकलाना व तुतलाना बन्द होता है और आवाज मधुर होती है।

10. शंख मुद्रा–
अपने हाथ के बाएँ अँगूठे को दाएँ हाथ की मुट्ठी

से पकड़कर, बाएँ हाथ की तर्जनी उँगुली को दाएँ हाथ के अँगूठे के अग्रभाग पर लगा दे। बाएँ हाथ की अन्य उंगुलियों से दाएँ हाथ की ऊँगुलियों को हल्का दबा देने से जो मुद्रा बनती है उसे शंख मुद्रा कहते हैं।

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से थायरायड ग्रंथि ठीक काम करती है व आवाज मधुर होती है।

11. प्राण मुद्रा –

अपने हाथ की कनिष्ठा व अनामिका ऊँगुलियों को अँगूठे से स्पर्श कराने पर जो मुद्रा बनती है उसे प्राण मुद्रा कहते हैं।

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं प्राण शक्ति बढ़ती है और आत्मविश्वास जागता है। नेत्र रोग में भी लाभ मिलता है।

12 .अपान मुद्रा –

अपने हाथ की मध्यमा व अनामिका दोनों ऊँगलियों को आपस में मिलाकर उनके शीर्षों को अँगूठे के शीर्ष से स्पर्श कराएँ बाकी दोनों ऊँगलियों को सीधा रखने पर जो मुद्रा बनती है उसे अपान मुद्रा कहते हैं।

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से शरीर के विषाक्त पदार्थों को बाहर करने में मदद मिलती है और मधुमेह, कब्ज व पेट संबंधी समस्यायें दूर होती हैं।

13. अपान वायु मुद्रा –

अपने हाथ के अँगूठे के पास वाली तर्जनी उँगुली को अँगूठे के जड़ में लगाकर मध्यमा व अनामिका को मिलाकर उनके शीर्ष भाग को अँगूठे के शीर्ष भाग से स्पर्श कराएँ व कनिष्ठा ऊँगली को अलग से सीधा रखने पर जो मुद्रा बनती है उसे अपानवायु मुद्रा कहते हैं। लाभ – इस मुद्रा को लगाने से हृदय रोग में लाभ मिलता है, पेट की गैस व शरीर की बेचौनी भी दूर होती है।

14. आदित्य मुद्रा –

अपने हाथ के अँगूठे के अग्रभाग को अनामिका की जड़ में लगाएँ व शेष ऊँगलियों को सीधा व मिलाकर रखने से जो मुद्रा बनती है उसे आदित्य मुद्रा कहते हैं।

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से छींक व उबासी में लाभ होता है।

15. ध्यान मुद्रा –

अपने बाएँ हाथ की हथेली पर दाएँ हाथ की हथेली रखें और कमर सीधी व आँख बंद रखने पर जो मुद्रा बनती है उसे ध्यान मुद्रा कहते हैं।

लाभ – इस मुद्रा को लगाने से ओज व एकाग्रता में वृद्धि होती है। ध्यान की उच्चतर स्थिति तक पहुँचने में सहायक होती है।

शिल्पी गोयल,
सहायक अध्यापिका(गणित),
पूर्व माध्यमिक विद्यालय निजामपुर,
विकास खण्ड–सिकंदराबाद,

क्रिकेट

–गीता यादव

क्रिकेट

इतिहास ....

क्रिकेट लगभग आज के समय में हर किसी को पसंद है। ये एक बहुत ही रोचक खेल है। इसमें जब तक अंतिम गेंद नहीं डाली जाती, तब तक कुछ नहीं कहा जा सकता।

आज के समय में क्रिकेट पूरी दुनिया में एक नशा सा बना हुआ है। क्रिकेट का इतिहास बहुत पुराना है जिसे दुनिया में फुटबाल के बाद दूसरे नंबर पर पसंद किया जाता है। इस खेल की शुरुआत इंग्लैंड से मानी जाती है। शुरू में बैट की जगह लकड़ी व बॉल की जगह धागे से बना बॉल या ककड़ का प्रयोग किया जाता था। विकेट के लिए पेड़ या गेट का प्रयोग होता था।

1611 में ये खेल छोटे से बड़ों के बीच पहुँचा। 18वीं शताब्दी में इस खेल के कुछ नियम बनाए गए। अंतरराष्ट्रीय मैच 1844 के बाद खेला गया, यद्यपि आधिकारिक रूप से अंतरराष्ट्रीय टेस्ट क्रिकेट 1877 से प्रारम्भ हुए।

क्रिकेट के प्रारूप–––––

1 टेस्ट क्रिकेट : ये क्रिकेट का उच्चतम स्तर है। इसकी वर्तमान प्रमुख टीमें निम्न हैं ...
भारत, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, श्रीलंका, वेस्टइंडीज, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, जिम्बाब्वे, बंगलादेश, अफगानिस्तान और आयरलैंड।
2006 में जिम्बाब्वे प्रतिस्पर्धा ना कर पाने के कारण निलम्बित की गई और अभी तक निलम्बित है। टेस्ट मैच अधिकतम 5–दिनों तक चलता है।
2– एक दिवसीय ––सीमित ओवरों के क्रिकेट को एक दिवसीय मैच कहते हैं। ये पचास ओवर का होता है एवं प्रत्येक टीम एक ही पारी खेलती है।
3–– 20–20 क्रिकेट –– 20–20 सीमित ओवर का नया रूप है, इसका उदेश्य है कि मैच 3 घंटे में खत्म हो जाए। पहला 20–20 विश्व चैम्पियनशिप 2007 में आयोजित किया गया।

प्रशासन

इसका प्रशासन दुबई में स्थित अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (ICC)द्वारा किया जाता है। ये पुरूष और महिला क्रिकेट दोनों का नियंत्रण करती है।

मैदान

इसका मैदान कई आकार का और घास का होता है, जिसे ग्राउंड्समैन द्वारा तैयार किया जाता है। इनके कार्य में उर्वरण, कटिंग, रोलिंग और सतह को समतल करना होता है। मैदान का व्यास 140–160 गज होता है। क्रिकेट का सबसे प्रसिद्ध मैदान ओवल होता है। आमतौर पर इसे पिच कहते हैं। पिच पर दोनों ओर 22 गज पर विकेट लगाये जाते हैं।
प्रत्येक विकेट में लकड़ी के तीन स्टंप होते हैं जो सीधी रेखा में होते हैं और इनके ऊपर दो लकड़ी के बेल्स रखे जाते हैं। चार लाइनें जो क्रीज के रूप में जानी जाती हैं, पिच के चारों ओर पेंट की जाती है (पोप्पिंग या बॉलिंग क्रीज) जो बल्लेबाज के सुरक्षित क्षेत्र और गेंदबाज की सीमा को निर्धारित करती है।

खेल के नियम

क्रिकेट का खेल दो टीमों के बीच खेला जाता है और दोनो टीमों में 11–11खिलाड़ी होते हैं। हर टीम का अपना एक कप्तान होता है। इसके अलावा मैदान में दो अम्पायर होते हैं, जिनका फैसला दोनों टीमों को मानना होता है। एक थर्ड अम्पायर भी होता है। टॉस जीतने वाला कप्तान तय करता है कि कौन सी टीम पहले बल्लेबाजी करेगी।

दसवें खिलाड़ी के आउट होते ही पूरी टीम को आउट हुआ माना जाता है।

पहले बल्लेबाजी करने वाली टीम अपने सीमित समय में या दस खिलाड़ी आउट होने से पहले अधिक से अधिक स्कोर करने की कोशिश करती है तो वहीं गेंदबाजी करने वाली टीम उन्हें ज्यादा स्कोर करने से रोकने का प्रयास करती है।

पारी समाप्त होने पर बल्लेबाज और गेंदबाज अपनी जगह बदल लेते हैं।

दूसरी टीम अब पहली टीम द्वारा बनाए गए स्कोर को पार करने की कोशिश करती है।

टीम में एक विकेटकीपर भी होता है ।

क्रिक्रेट में रन बनाने के तरीके ———
1– विकेट के बीच दौड़कर ।
2–चौका – गेंद जब मैदान पर दौड़ती हुई सीमा पार जाए तो बल्लेबाज़ को चार रन मिलते हैं।
3– छक्का – जब बॉल हवा में, बिना टप्पा खाए सीमा पार जाए तो बल्लेबाज को छः रन मिलते हैं।
4– अतिरिक्त रन – नो बॉल, वाइड बॉल, बाई, लेग बाई

आउट होने के प्रकार –
बोल्ड
कैच
लेग बिफोर विकेट (l.b.w.)
रन आउट
हिट विकेट
स्टंप आउट

प्रसिद्ध खिलाड़ी ————————
भारतीय –
कपिल देव
सचिन तेंदुलकर
महेन्द्र सिंह धोनी
विराट कोहली
हरभजन
युवराज
इरफान पठान

विदेशी खिलाड़ी
क्रिस गेल
रिकी पोंटिंग
हर्शल गिब्स (एक ओवर में 6 छक्के, 2007 विश्व कप)
चामिण्डा वास
शोएब अख्तर

मुख्य स्टेडियम
भारतीय ...
ईडेन गार्डेन कोलकता
फिरोज शाह कोटला दिल्ली
ग्रीन पार्क कानपुर

विदेशी स्टेडियम ...
शेरे बांग्ला स्टेडियम बंगलादेश
सिडनी क्रिकेट स्टेडियम आस्ट्रेलिया
केप टाउन स्टेडियम साउथ अफ्रीका

खेल के लाभ .....
क्रिकेट एकमात्र ऐसा खेल है जिसे सबसे ज्यादा टीम भावना से खेला जाता है।
मांसपेशियाँ बनती हैं।
संतुलन बनता है।
गति और फुर्ती बढ़ती है।
हृदय स्वस्थ रहता है।

गीता यादव,
प्रधानाध्यपिका,
प्राथमिक विद्यालय मुरारपुर,
विकास खण्ड–देवमई,
जनपद–फतेहपुर

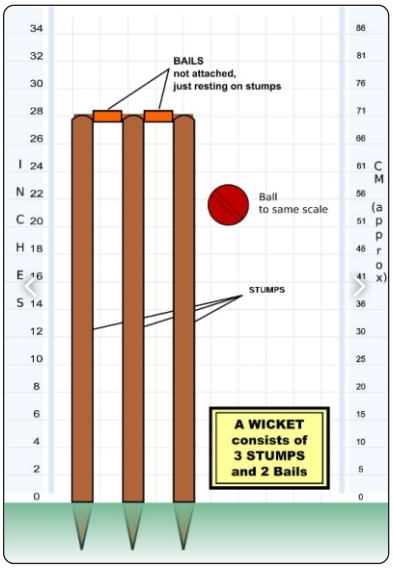

मिशन–उपस्थिति

बेसिक के सरकारी विद्यालयों में पायी जाने वाली सबसे प्रमुख समस्या छात्र उपस्थिति के प्रतिशत को लेकर बनी रहती है। जहाँ प्राइवेट विद्यालयों में उपस्थिति 80% से अधिक हमेशा बनी रहती है वहीं बेसिक के विद्यालयों में यह घटकर औसतन 50 से 60% रह जाती है क्या कारण है कि बेसिक में इतनी कम उपस्थिति रहती है। साथ ही वे कौन सी राहें हैं, जिन पर चलकर छात्र उपस्थिति को 80% से अधिक पाया जा सकता है। इन समस्त तथ्यों पर विचार करने के लिए प्रदेश के विभिन्न जनपदों से ऐसे विद्यालयों के अनुभवों को साझा किया जा रहा है, जिन्होंने न स्वयं राहें बनायीं बल्कि उन राहों पर चलकर अपने विद्यालय की औसत उपस्थिति 80% से अधिक बनाए रखी। इस पर स्वयं ना कहकर उनके अनुभवों को उन्हीं के शब्दों में आपके समक्ष रखा जा रहा है।

मैं नागेन्द्र कुमार चौरसिया प्रधानाध्यापक प्राथमिक विद्यालय–मोहनगढ़, क्षेत्र–बृजमनगंज, जनपद – महराजगंज जब 3 अक्टूबर 2016 को जनपद–बलरामपुर से ट्रान्सफर के पश्चात इसी स्कूल में पदस्थापित हुआ तो देखा कि 124 के सापेक्ष सिर्फ 22 बच्चे स्कूल में थे। वो भी तब जबकि अगले दिन ड्रेस वितरण होना था । तभी मुझे लगा कि यहाँ बहुत कुछ नया करना पड़ेगा। सबसे पहले मैंने अपने स्टाफ को motivate किया कि आप लोग 1–1 class लीजिए मैं स्वयं 2 class लूँगा। मैं रोजाना 15 मिनट पहले पहुँचकर समय से प्रार्थना सभा संपन्न कराता। प्रश्न प्रहर 15 मिनट तक चलाना। सभी बच्चों को टाई, बेल्ट, आईकार्ड की व्यवस्था की गई। फिर घर–घर जाकर सभी अभिभावकों को अपने पाल्यों को समय से स्कूल भेजने के लिए प्रेरित किया। फिर क्या उसी सत्र में 124 के सापेक्ष लगभग 100 उपस्थिति होने लगी। मेरे स्कूल के बच्चे कभी खेलकूद प्रतियोगिता में भाग नहीं लेते थे जिन्हें पहली बार लेकर गया तो उन्होंने ब्लॉक ही नहीं बल्कि जनपद स्तर पर भी silver और gold मेडल प्राप्त कर मेरा मान बढ़ाया। फिर नए सत्र 2017–18 में मैंने जनसहयोग से 32 इंच एलईडी टीवी से स्मार्ट class से पढ़ाई शुरू की जिससे बहुत ही अच्छा रिस्पॉन्स मिला। इससे इस सत्र में 192 नामांकन के सापेक्ष 160–180 तक की उपस्थिति होने लगी। मेरे स्कूल में सभी class में जनसहयोग से पंखा लगा है। प्रार्थना सभा के लिए लाउडस्पीकर, इनवर्टर इत्यादि सुविधाओं के साथ मेरा स्कूल कहीं से प्राइवेट स्कूल से कम नहीं है। मेरे स्कूल को news पेपर और तमाम चैनल पर भी दिखाया गया है। इस सत्र में मेरे स्कूल में कुल नामांकन अभी तक 223 हो गया है जो कि जुलाई में और भी बढ़ने की प्रबल संभावना है। वर्तमान सत्र में computer class भी चलेगा जिसके लिए computer दान में मिल गया है। मुझे बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि मेरे आने से पहले मेरे ही ब्लॉक में प्राथमिक विद्यालय – मोहनगढ़ को बहुत कम लोग जानते थे लेकिन मेरे छोटे से कार्यकाल में अब मेरे स्कूल को जनपद के साथ साथ प्रदेश के लोग भी जानने लगे हैं जिसमे मेरे सभी स्टाफ की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

संकलनकर्ता
विनोद कुमार
भदोही

क्रमशः अगले अंक में.....

आस्था के कुम्भ से ज्ञान के कुंभ की ओर

कार्यक्रम का शुभारंभ महोबा के जिलाधिकारी द्वारा माँ सरस्वती की अर्चना से हुआ और महोबा की एक बहन ने सुन्दर सरस्वती वंदना की। कार्यक्रम के संचालन की बागडोर साकेत बिहारी शुक्ला जी के हाथों मे थी जिन्होंने लाजवाब संचालन किया।

जनपद महोबा के एडमिन जी ने आये हुये सभी विशिष्ट अतिथियो का हमारी भारतीय परम्परा के अनुसार कुमकुम चावल से चन्दन लगाकर स्वागत किया और प्रीति श्रीवास्तव को मिली स्वागत गीत गाने की जिम्मेदारी। उसके बाद शुरु हुई ज्ञान की कुंभ की अद्भुत बेमिसाल प्रदर्शनी पीपीटी के माध्यम से प्रदेशभर से आए सभी नवाचारी शिक्षकों का अपने विद्यालय में किए गए नवाचारों का अद्भुत अतुलनीय प्रदर्शन। एक से बढ़कर एक पीपीटी प्रदर्शित की जा रही थी। हर प्रदर्शन में कुछ न कुछ नया सीखने को मिल रहा था।

तय समय पर मध्यावकाश हुआ, शाम 06:00 बजे पहले दिन की प्रस्तुति समाप्त हुई और 07:00 बजे बेसिक की कविताएँ स्वरान्जलि सन्ध्या का पूर्व निर्धारित कार्यक्रमशुरु हुआ जिसमें हृदयेश सर का भावविहवल कर देने वाला एकल अभिनय ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' , उदय सर , छवि , सुमनलता मैम... इत्यादि के साथ प्रीति श्रीवास्तव को संगीतमय प्रस्तुति करने का अवसर मिला।

अतिथिगण लाजवाब थे, नवाचारी शिक्षकों के इस बेजोड़ नवाचार को देखकर सभी ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

इसके पश्चात रात्रि 10:00 बजे सभी स्वादिष्ट भोजन करने के उपरांत अपने निर्धारित स्थान पर सुबह समय से आने के लिए प्रस्थान कर गये। दूसरे दिन कार्यक्रम 10:00 बजे से अपने निर्धारित समय पर शुरू हो गया और फिर चली एक से बढ़कर एक हिट पीपीटी प्रस्तुति।

3 बजे से महोबा हमीरपुर के सांसद एडी बेसिक और जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी महोबा की उपस्थिति में पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरण

समारोह। कभी वीर भूमि कॉलेज के टॉपर रहे सर्वश्रेष्ठ सांसद के विस्तार से सम्मानित जनपद हमीरपुर और महोबा के सांसद जी के करकमलों से माँ सरस्वती की पूजा अर्चना हुई और प्रीति श्रीवास्तव को संस्कृत में सरस्वती वंदना गाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तत्पश्चात आये हुए गणमान्य अतिथियों के ओजस्वी उद्बोधन से सभी सिंचित हुए, उर्जित हुए आदरणीय शिक्षक भाई ओमवीर जी की शानदार विद्यालय व्यवस्था और नवाचारी गतिविधियों से युक्त पीपीटी देखकर गणमान्य अतिथि भी अपने आपको प्रशंसा करने से नहीं रोक पाए और सबने एक स्वर से कहा कि बेसिक बदल रहा है। मिशन के सभी सिपाहियों का पुरजोर सम्मान हुआ। इस मिशन की भव्य कल्पना को साकार रूप देने वाले मिशन शिक्षण संवाद के प्रणेता संस्थापक नेतृत्व करता पिता समान बड़े भाई आदरणीय श्री विमल भैया के आशीर्वचन एवं ओजस्वी वचनों से लाभित होने का मौका भी मिला। 2 दिन की सुंदर शानदार सराही गई प्रस्तुतियों के बीच अब समय बढ़ चला विराम की ओर... निश्चित रूप से इस पूरे शानदार कार्यक्रम के सफल आयोजन का कारण वीर भूमि महोबा की टीम, वहाँ के एडमिन श्री सुरेश सोनी जी एवं देवेश खरे जी का विवेक भरा लाजवाब सोच–समझ से परिपूर्ण सख्त एवं अनुशासित प्रबंधन रहा है।

आयोजक मंडल –

डॉ0 खुर्शीद हसन, सुरेश सोनी, देवेश खरे, सुनील पाठक, अनन्त तिवारी, हृदयेश गोस्वामी, प्राणेश जी, राजकुमार शर्मा, साकेत बिहारी शुक्ला, राम नारायन पांडेय, अंजू गुप्ता, वीरेंद्र परनामी, बाबूराम चक्रवर्ती, उदय करन राजपूत, अभिषेक पुरवार, देवेश खरे जी सहित पूरी टीम तथा महोबा सहित यादों को सहेज रहे छायाकार बबलू सोनी (फोटो वाले भैया) जी को बहुत बहुत आभार एवं साधुवाद।

वीर भूमि महोबा के भाई बहनो का आतिथ्य, प्रेम, निष्ठा, समर्पण, अनुशासन भुलाये नहीं भूलेगा।

हैट्स ऑफ टीम महोबा।

दिनांक 28 एवं 29 को आयोजित इस दो दिवसीय कार्यशाला से सबकी प्रस्तुति के आधार पर कुछ नवाचार नोट किए गये जो सभी के द्वारा अपनाए जा सकते हैं––

पहला अनुकरणीय नवाचार

जनपद शाहजहाँपुर की प्रस्तुति के आधार पर एक नवाचार अनपढ़ अभिभावकों को अपने बच्चों की दैनिक प्रगति परखने के लिए अध्यपकों द्वारा तीन रंगों के पेन का प्रयोग किया जाना!!

नीले रंग के पेन का प्रयोग बच्चों की सामान्य प्रगति (average), लाल रंग का प्रयोग ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता(not good) तथा हरे रंग का प्रयोग (very good) अर्थात संतोषजनक स्थिति को दर्शाता है जिसे अभिभावक आसानी से समझ सकते हैं!!

दूसरा अनुकरणीय नवाचार गोरखपुर से जिनके द्वारा अपने विद्यालय में अटेंडेंस के दौरान बच्चों को उनके अनुक्रमांक का वर्ग एवं घन बोला जाना जिससे कि बच्चे संख्याओं का वर्ग एवं घन प्रतिदिन के अभ्यास से जुबानी याद कर सकते हैं!!!

तीसरा अनुकरणीय नवाचार जनपद एटा की प्रस्तुति से उनके द्वारा अपने विद्यालय में बच्चों द्वारा पेज बर्बाद से बचाने को किया गया प्रयास जिसमें वो प्रतिदिन कॉपियों के निरीक्षण के समय प्रत्येक बच्चे की कॉपी में बिस्किट या टॉफी सिंबल बना, महीने के अंत में सभी सिम्बलों को गिनकर उतने ही टॉफी एवं बिस्किट का दिया जाना!!

बच्चे ज्यादा से ज्यादा टॉफी या बिस्किट पा सके इस हेतु अपनी कॉपी का यदि पन्ना गलती से फट भी जाए तो उसे स्वयं जोड़कर रखते हैं।।

श्यामपट्ट कार्य का चार्ट में प्रतिदिन का संकलन भी अनुकरणीय कार्य था!!

चौथा अनुकरणीय नवाचार जनपद झाँसी से खातून मैडम द्वारा अपनाए जा रहे विद्यालय की बेटियों की शादियों के आमंत्रण के दौरान सभी बेटियों को एक साड़ी एवं 501 आशीर्वादस्वरुप देकर विद्यालय प्रांगढ़ में उन्हीं के नाम से एक पेड़ का रोपित किया जाना!!

ललितपुर के नीरज तिवारी जी इस कार्यशाला की खोज कहे जा सकते हैं क्योंकि इसके पहले इनके ज्स्ड से लोग अनभिज्ञ थे!!

स्वरांजलि के कांसेप्ट के साथ आयोजित ये कार्यशाला शानदार एवं सफल रही है!!! हम सभी को बस केवल आदत को बदलने की जरूरत है कि अपने प्रयासों की प्रस्तुति के बाद सभी के प्रयासों की प्रस्तुति भी अच्छे श्रोता की तरह सुननी चाहिए !!!!

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेज: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूह: https://www.facebook.com/groups/1180108654646 49/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूब: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6— व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7— ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8— वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात